खण्ड-06 सत्र -04 (भाग-04) अंक-40

शुक्रवार

30 सितम्बर, 2016
08 अश्विन, 1938 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

छठी विधान सभा

तीसरा सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड-04 (भाग-04) में अंक 40 सम्मिलित है।)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

प्रसन्ना कुमार सूर्यदेवरा

सचिव

PRASANNA KUMAR SURYADEVARA

Secretary

एम.एस. रावत

उप-सचिव (सम्पादन)

M.S. RAWAT

Deputy Secretary (Editing)

विषय सूची

सत्र-4 भाग (4) शुक्रवार, 30 सितंबर, 2016/08 अश्विन, 1938 (शक) अंक-40

क्रसं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची।	1-2
2	निधन संबंधी उल्लेख।	3-4
3	संकल्प (नियम-90)	4-18
4.	सदन पटल पर प्रस्तुत कागजात।	18-19
5.	ध्यानाकर्षण (नियम-54)-दिल्ली में विषाणु-जनित बीमारियों के फैलने के संबंध में।	19-66
6.	मुख्यमंत्री का वक्तव्य।	66-68

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-4 भाग (4) शुक्रवार, 30 सितंबर, 2016/08 अश्विन, 1938 (शक) अंक-40

दिल्ली विधान सभा

सदन अपराह्न 2:00 बजे समवेत हुआ।

सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची:

1 श्री शरद कुमार
2 श्री संजीव झा
3 श्री पंकज पुष्कर
4 श्री पवन कुमार शर्मा
5 श्री अजेश यादव
6 श्री महेन्द्र गोयल
7 श्री वेद प्रकाश
8 श्री सुखवीर सिंह दलाल
9 श्री ऋतुराज गोविंद
10 श्री रघुविन्द्र शौकीन
11 श्रीमती बंदना कुमारी
12 श्री जितेन्द्र सिंह तोमर
13 श्री राजेश गुप्ता
14 श्री सोमदत्त
15 सुश्री अलका लाम्बा
16 श्री आसिम अहमद खान
17 श्री विशेष रवि
18 श्री हजारी लाल चौहान
19 श्री शिव चरण गोयल
20 श्री गिरीश सोनी

21 श्री जरनैल सिंह (तिलक नगर)
22 श्री राजेश ऋषि
23 श्री महिन्दर यादव
24 श्री आदर्श शास्त्री
25 श्री कैलाश गहलोत
26 सुश्री भावना गौड़
27 श्री सुरेन्द्र सिंह
28 श्री विजेंद्र गर्ग
29 श्री प्रवीण कुमार
30 श्री मदन लाल
31 श्री सोमनाथ भारती
32 श्रीमती प्रमिला टोकस
33 श्री नरेश यादव
34 श्री प्रकाश
35 श्री अजय दत्त
36 सरदार अवतार सिंह कालकाजी
37 श्री सही राम
38 श्री नारायण दत्त शर्मा
39 श्री अमानतुल्लाह खान
40 श्री राजू धिांगान
41 श्री मनोज कुमार
42 श्री निंतिन त्यागी
43 श्री ओम प्रकाश शर्मा
44 श्री एस. के. बग्गा
45 श्री अंनिल कुमार बाजपेयी
46 श्री राजेन्द्र पाल गौतम
47 श्रीमती सरिता सिंह
48 मो. इशराक
49 श्री श्रीदत्त शर्मा
50 चौ. फतेह सिंह
51 श्री जगदीश प्रधान

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-4 शुक्रवार, 30 सितंबर, 2016/08 अश्विन, 1938 (शक) अंक-40

सदन अपराह्न 2.00 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय **(श्री राम निवास गोयल)** *पीठासीन हुए।*

अध्यक्ष महोदय : राष्ट्रगीत शुरू करें।

(राष्ट्रीय गीत - वंदेमातरम)

अध्यक्ष महोदय : छठी विधानसभा के चौथे सत्र के चौथे भाग में आप सभी का हार्दिक स्वागत है। आशा है, आप सदन के समय का पूर्ण सदुपयोग करके विभिन्न जनहित के मुद्दों को उठायेंगे और शांतिपूर्वक सदन की कार्यवाही में भाग लेंगे।

निधन संबंधी उल्लेख

माननीय सदस्यगण, जैसा कि आप सबको विदित है कि दिनांक 18 सितंबर, 2016 को जम्मू-कश्मीर के उड़ी सैक्टर में आतंकवादी हमले से 19 भारतीय सैनिक शहीद हो गये, जिस कायरतापूर्ण ढंग से सोते हुए सैनिकों पर यह हमला हुआ, इसकी जितना निंदा की जाये, उतनी कम है। वास्तव में यह घटना मानवता पर हमला है। आतंकवादी इस तरह की घटनाओं से देश में अस्थिरता कायम करना चाहते हैं लेकिन भारतीय सेना ऐसे मंसूबों को कायम नहीं होने देगी। भारतीय सैनिकों का साहस और बलिदान व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। भारतीय सेना

विकट परिस्थितियों में भी सदैव देश की सीमाओं की सुरक्षा के लिए तत्पर रहती है और देश की सुरक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगा देती है। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से इन शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनके परिजनों को इस अपार दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

माननीय सदस्यगण, दिनांक 26 सितंबर, 2016 को दिल्ली के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, नांगलोई के शिक्षक श्री मुकेश कुमार पर जिस तरह स्कूल के ही दो छात्रों ने कातिलाना हमला किया और उनकी मौत हो गई, यह घटना भी दुखद है। अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों को अच्छे संस्कारों और नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ायें ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। मैं दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिजनों के प्रति शोक संवेदना प्रकट करता हूं। अब दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिजनों के प्रति शोक संवेदना प्रकट करता हूं। अब दिवंगत आत्माओं के सम्मान में सदन द्वारा दो मिनट का मौन धारण करेंगे।

(सदन द्वारा दो मिनट का मौन किया गया।)

(संकल्प नियम-90)

अध्यक्ष महोदय : माननीय मुख्यमंत्री, श्री अरविंद केजरीवाल जी नियम 90 के अंतर्गत संकल्प प्रस्तुत करेंगे।

मुख्यमंत्री (श्री अरविंद केजरीवाल) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, जैसा कि सब लोग जानते हैं कि 18 सितंबर को किस तरह से पाकिस्तान ने हमारे देश की सेना के 18, अब एक और क्षति हुई है, 19 जवानों को हताहत किया। हमारे 19 जवान शहीद हुए और किस तरह से कल हमारी सेनाओं

ने उसका करारा जवाब दिया। मैं सदन के समक्ष प्रस्ताव लाना चाहता हूं कि उड़ी जो अटैक हुआ, उसकी कड़े शब्दों में हम निंदा करते हैं और जो हमारे सैनिक शहीद हुए, उनको हम श्रद्धांजलि देते हैं। भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की क्षमता दे। हमारी सेनाओं ने जो कल बहादुरी के साथ देश की रक्षा की, उसकी हम तारीफ करते हैं और प्रशंसा करते हैं और भारतीय सेना के साथ पूरा देश है। पूरा देश उनके साथ खड़ा है तन-मन-धन से। पाकिस्तान को चेतावनी देते हैं कि इस किस्म की हरकतें करना बंद करे और ये सारा सदन केंद्र सरकार को और प्रधानमंत्री जी को आश्वस्त करना चाहता है कि जो भी कदम भारत की इंटर्नल और एक्सटर्नल सिक्योरिटी के लिए उठाने की जरूरत पड़ेगी, वो जब-जब वो कदम उठाएंगे, हम सब उनके साथ खड़े हैं :

"The Legislative Assembly of NCT of Delhi having its Sitting in Delhi on 30 September, 2016:

Condemns in strongest possible terms the cowardly attack on Army Camp in Uri by Pakistan sponsored terrorists,

Condoles the sad demise of 19 of our soldiers in the said attack,

Congratulates the brave armed forces for giving befitting reply to the enemy forces from across the border and for conveying stern message on behalf of our country and our people,

Warns Pakistan to desist from repeating such misadventures henceforth,

Urges upon the Government of India to proactively take all necessary measures to ensure that our Military Installations are fully secured so that tragic incidents such as attacks on Uri and Pathankot do not recur,

Extends wholehearted support to measures to be initiated by the Govern-

ment of India for protecting the people and territorial integrity of our Country, and

Exhorts the Government of India to continue with the time-tested measures to build, sustain and consolidate the friendly relationship with all responsible for causing hardships to people of the sub-continent."

अध्यक्ष महोदय : अब माननीय मुख्यमंत्री जी का ये संकल्प हम सब के सामने है, इसमें अन्य सदस्य भी चर्चा में भाग ले सकते हैं। सर्वप्रथम मैं माननीय उप मुख्यमंत्री मनीष सिसौदिया जी से प्रार्थना करूंगा कि अपने विचार रखें।

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, हमारे देश के सैनिक जो हमारे ही सब परिवारों के हिस्से हैं, हम देश के अलग-अलग हिस्सों से आखिर इस देश की राजधानी में आए गांव से। देहात में किसानों से, अध्यापक परिवारों से, वकील हर तरह के परिवारों से निकलकर लड़के सैना में जाते हैं, लड़कियां सैना में जा रही हैं और वहां वो जिन परिस्थितियों में काम करते हैं, मैं तो स्वयं एक पत्रकार के रूप में जब के बॉर्डर एरियाज में जाता था तो देखता था जो कमांड हैडक्वाटर्स है, जो हैडक्वाटर एरियाज हैं, उसमें तब भी थोड़ी बहुत सुविधाएं, थोड़ी-बहुत कह सकते हैं कि कंपेरिटेटेटिबली होती है लेकिन जब उनकी टुकड़ियां अलग-अलग हिस्सों में गॉर्डिंग, गार्ड के रूप में खड़े होते हैं, वहां नजर रखने के लिए बॉर्डर पर या सर्च आपरेशंस पर जाते हैं, कितनी विपरीत परिस्थितियों में, कैसे जंगल में जहां पीने के लिए पानी तक नहीं होता, जहां कुछ खाने-पीने की व्यवस्था नहीं हो सकती। दूर-दूर 10-10 किलोमीटर पैदल चलकर जाते हैं, आधे-आधे पानी को क्रॉस करके जाते हैं क्योंकि वहां ब्रिजेज नहीं हैं, कोई ब्रिज तो है नहीं तो किस तरह से नदियों को और सारे इलाकों को पार करके जाते हैं! उन सब परिस्थितियों में रहकर जो सैनिक काम कर रहे हैं और एक दिन जब वो अपने कैंप में, वो भी टैंट में आराम

कर रहे थे, उस वक्त इन आतंकवादियों ने जो स्पष्टत: पाकिस्तान की ओर से भेजे जा रहे हैं लगातार देश में और पाकिस्तान की नापाक हरकतों का नतीजा है, उन्होंने आकर उनके ऊपर हमला किया और उसमें बहादुरी से जवाब देते हुए हमारे 19 बहादुर नौजवान सैनिक शहीद भी हुए। मैं नमन करता हूं उनकी बहादुरी को, उनकी शहादत को, देश के लिए उन्होंने जो कुर्बानी दी, उनके परिवार को नमन करता हूं क्योंकि उनके परिवार में जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति नहीं हो सकती लेकिन जो कंट्रीब्यूशन देश को सुरक्षित रखने में उनक बच्चे वहां दे रहे थे और उनकी वजह से आज हमारा देश सुरक्षित है कि हम यहां दिल्ली में बैठकर बात कर पा रहे हैं, उनको नमन करता हूं, उनकी परिवार की बहादुरी को नमन करता हूं और साथ ही हमारे सैनिकों ने जिस तरह से मुंह तोड़ जवाब दिया है, जिस तरह से आतंकवादियों को, आतंकवादियों की हरकतों को रोकने के लिए एक बहुत कड़ा मैसेज जिस बहादुरी के साथ दिया है, उसकी बहुत ज्यादा जरूरत थी देश में, उसके लिए उनकी बहादुरी को सलाम करता हूं।

मैं सदन की ओर से और देश की ओर से, दिल्ली की जनता की ओर से ऐसे तमाम सैनिकों को जो देश की सेना के साथ मिलकर बॉर्डर पर खड़े हुए देश की रक्षा में लगे हुए हैं, मैं आश्वस्त भी करना चाहता हूं कि आप बॉर्डर पर लगिए और देश की राजनीति, देश की व्यवस्था, देश का एडमिस्ट्रेशन, देश का समाज आपकी, आपके परिवार की, आपकी व्यवस्थाओं की चिंता करने के लिए बहुत सम्मान के साथ में देश आपके साथ खड़ा हुआ है, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री विजेन्द्र गुप्ता जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, आज देश के 120 करोड़ लोगों का मस्तक ऊंचा हो गया है। आज हम स्वाभिमान और गर्व से कह सकते हैं

कि ऐसा मुंह तोड़ जवाब उन नापाक ताकतों को, उस दुश्मन दोस्त का जो दुश्मन के रूप में है लेकिन दोस्ती की बात करता है, एक ऐसे मुकाम पर आकर करारा जवाब दिया गया है। सैनिकों ने जिस बहादुरी का परिचय दिया, सेना के जवानों ने जिस सूझबूझ से इस पूरे कार्य को अंजाम दिया और जिस तरह से एक राजनीतिक इच्छा शक्ति के साथ सेना के अधिकारियों ने इस पूरे प्रकरण को अपने हाथ में लिया। 18 सितंबर को जब ये घटना घटित हुई थी तो पूरे देश के सामने एक सवाल था; हमारे सैनिकों पर जो हमले किए गए, आत्मघाती हमले, वो जहन में किसी भी तरह से उस पर तसल्ली नहीं हो रही थी। 18 सितंबर के बाद तुरंत प्रधानमंत्री जी ने ये घोषणा की थी कि इसका मुंह तोड़ जवाब दिया जाएगा। पूरे देश को आश्वस्त किया था। तब पाकिस्तान ने कहा था कि भारत की सरकार लिप सर्विस कर रही है अपने मीडिया को और अपने देश की जनता को एड्रेस करने के लिए। उसके बाद 24 सितंबर को केरल में, मैं भी वहां उपस्थित था, तब प्रधानमंत्री जी ने सीधे चेतावनी दी थी पाकिस्तान को और तब ये सुनिश्चित हो गया था, देश को इस बात का अहसास हो गया था कि बहुत जल्द पाकिस्तान को मुंह तोड़ जवाब दिया जाएगा। मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए, जो मुझे इसमें एक कमी नजर आई, मैं मुख्यमंत्री जी से आग्रह करूंगा। उन्होंने कॉग्रेच्युलेट जहां लिखा है, और इसमें कोई दो राय नहीं है कि देश के सैनिक जिनके ना नाम छपते हैं, ना जिनका चेहरा सामने आता है, अगर जाती है तो उनकी सिर्फ जान जाती है। आज हिंदुस्तान की आर्मी को पूरी दुनिया में जिन्होंने एक मुकाम पर पहुंचाया है, ऐसे सैनिकों को हम सब सैल्यूट करते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है लेकिन आर्मी चीफ ने ये भी कहा है कि हमको जिस तरह का राजनीतिक वातावरण और जिस तरह की छूट मिलनी चाहिए थी, इससे

पहले कभी नहीं मिली और इसलिए मैं चाहूंगा इस कॉग्रेच्युलेशन में आप प्रधानमंत्री जी का नाम अवश्य जोड़ें। "The brave amed forces for giving befitting reply to the enemy forces from across the border and conveying stern message on behalf of our country and our people." मैं चाहूंगा इसमें एक लाईन प्रधानमंत्री जी को बधाई देते हुए जिससे कि भारत की सरकार निरंतर और सतत इस कार्य को आगे बढ़ाए, इसकी आवश्यकता है और दूसरी मैं हिदायत मुख्यमंत्री जी को देना चाहूंगा जिस समय ये काम अंजाम दिया जा रहा था, उसके तीन घंटे पहले मात्र यानि कि जब हमारे सैनिक चल पड़े थे तो मुख्यमंत्री जी ने एक ट्वीट किया था कि जो सेनाओं का मनोबल कहीं ना कहीं गिरता है उसमें लिखा है : "Excellent article on Uri rather than Pak. India seems to be getting isolated internationally." मैं समझता हूं कि ये देश के ऊपर एक करारा तमाचा है 120 करोड़ लोगों के मुंह पे, मैं मुख्यमंत्री जी से आग्रह करूंगा, इस पर कोई राजनीति नहीं करना चाहूंगा, उनका कद और बड़ा होगा, इस ट्वीट को भी वो विदड्रो कर ले क्योंकि आज पूरी दुनिया हिंदुस्तान की तरफ देख रही है। अगर हमीं अपने को आईसोलेट करने की बात कहेंगे तो उसका विपरीत असर हमारे पूरे प्रकरण पर पड़ेगा, पूरी इस कार्रवाई पर पड़ेगा। मुख्यमंत्री जी का अक्सर मैं उनकी इस बात में तारीफ करूंगा कि उन्होंने, जब भी ऐसा कुछ हुआ है, कभी इंकार नहीं किया है। उन्होंने सदन के अंदर कहा। हम एक बार नहीं, 10 बार अगर कुछ कोई चीज ठीक करनी होगी, हम करेंगे। उसमें हमें कोई वो नहीं है। मेरी उनसे गुजारिश है उस ट्वीट को विदड्रो कर लेंगे तो सेनाओं का मनोबल और बढ़ेगा, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री कपिल मिश्रा जी।

पर्यटन एवं जल मंत्री (श्री कपिल मिश्रा) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो जब हिंदुस्तान के किसी क्षेत्र पर हमला होता है आतंकवादियों का, आत्मघातियों का, वो भी हमला सेना के ही किसी मुख्यालय पर हो जाए तो पूरा देश सदमे में आ जाता है और पिछले वर्षों से इस देश ने इस प्रकार के हजारों बार हमले देखे हैं, आतंकवादियों के हमले देखे हैं, पाकिस्तान की सेनाओं के हमले देखे हैं, और एक के बाद एक हमारे वीर जवानों के ताबूतों को अपने गांवों में, शहरों में वापस आते हुए देखा है, कारगिल के समय भी हमने देखा है कि अपने ही देश में, अपनी ही जमीन को बचाने के लिए कितने ही 22 साल के, 21 साल के नौजवानों को अपनी जान देनी पड़ी, देश के लिए शहादत देनी पड़ी। देश की संसद पे हमला हो गया, हमने वो काला दिन भी देखा जब हिंदुस्तान की ही सरकार, हिन्दुस्तान के ही सरकारी हवाई जहाज में सूटकेस में चीजें भरकर और देश के तीन सबसे बड़े दुश्मनों को हमीं छोड़कर आ गए। तो बार-बार सिर नीचा होता रहा इस देश का। ऐसा लगता रहा कि क्या कभी हिंदुस्तान दुनिया के बाकी देशों की तरह कभी खड़े हो के आतंकवादियों से बदला लेने की बात कर पाएगा! और पठानकोट पर जब हमला हुआ और उस हमले के बाद जब आई. एस. आई. के लोग हिंदुस्तान आए और आई. एस. आई. के अफसर पठानकोट के एयरबेस के अंदर जा रहे थे। जांच करने के लिए और हमारे वीर जवान उनको सिक्योरिटी दे रहे थे हाथों में बंदूकें पकड़ के कि कोई आई. एस. आई. वालों को हाथ ना लगा दे। मुझे लगा कि उससे काला दिन हिंदुस्तान के इतिहास में शायद कभी नहीं आया! इस देश ने, इस जमीन ने जिसे इतने वीर सैनिकों को देखा है, वीर राजाओं को देखा है, मुझे लगता है कि भारत माता अगर शर्मिंदा हुई होगी, भारत माता अगर फूट-फूट के रोई होगी तो उस दिन जरूर रोई होगी

जिस दिन आईएसआई वाले पठानकोट के एयरबेस के अंदर आए थे। उस दिन से इंतजार कर रहा हूं कि कभी तो कोई खड़ा होगा और माफी मांगेगा कि पठानकोट के एयरबेस में, आई.एस.आई. को बुलाना गलती थी! मेरे देश का सिर नीचा हुआ, मेरे देश की सेनाओं का सिर नीचा हुआ, मेरे सैनिकों का मनोबल टूटा हुआ है, आज भी इंतजार है और उड़ी पर जब हमला हुआ, उड़ी पर हमला हुआ तो आप समझ लीजिए पानी सर से ऊपर निकल गया, पार पार निकल गया। इस देश में अब कोई बर्दाश्त करने को तैयार नहीं और एक-एक दिन ऐसे लग रहा था जैसे एक-एक साल के बराबर है, रोज सोचते थे शायद कभी तो खबर आएगी कि हमारी सेना ने भी कुछ तो किया, कोई तो बदला लिया। और मुझे लगता है कि शायद कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एक गुस्से का, क्रोध का, प्रतिशोध का, नाराजगी का एक वातावरण पूरे देश में तैयार हो गया था और मैं ये मानता हूं कि कल जो हुआ, वो साधारण नहीं है, हमारी सेना पाकिस्तान के बॉर्डर के पार जा के दुश्मन के आतंकी शिवरों को नष्ट करती है; ये कोई साधारण नहीं है लेकिन इस देश का एक युवा होने के नाते मैं ये भी जानता हूं और मानता हूं कि अगर कल भी ये नहीं होता तो इस देश की जनता बहुत कुछ अपने हाथ लेने को तैयार बैठी थी गुस्से में, नाराज थे लोग, निराश से थे लोग। बधाई जरूर देनी बनती है सेना को भी, सैनिकों को भी सैनिकों को भी और उस नेतृत्व को को भी जिसने ये निर्णय लिया था। विजेन्द्र गुप्ता जी ने जब कहा कि प्रधानमंत्री महोदय का नाम जुड़ना चाहिए तो बिल्कुल हिंदुस्तान की क्रिकेट टीम मैच जीते तो बधाई बी.सी.सी.आई. के चेयरमेन को भी बनती है, खिलाड़ियों को तो बनती है लेकिन एक बधाई बी.सी.सी.आई. के चेयरमेन को भी बनती है, खिलाड़ियों को तो बनती है लेकिन एक बधाई बी.सी.सी.आई. के चेयरमेन को भी बनती

है और ये कोई छोटा निर्णय नहीं है। हिंदुस्तान में अगर पहले आतंकवादी हमले के जवाब में ये निर्णय ले लिया होता, जब पहली बार कोई आतंकवादी इस देश में घुसा था, जब पहली बार किसी ने हमारे देश के ऊपर आंख उठाने की कोशिश की थी, तभी अगर ऐसा कोई निर्णय ले लिया होता, जब मुफ्ती मोहम्मद सईद के परिवार की एक बेटी के बदले आतंकवादी छोड़े गए, काश! तब ये निर्णय ले लिया होता, जब हमारे अफगानिस्तान में जो हवाई जहाज का अपहरण हुआ, उसके बदले आतंकवादी छोड़े गए, तब अगर ये निर्णय ले लिया होता तो कभी भी इतिहास में हिंदुस्तान ने ऐसा कोई निर्णय ले लिया होता तो शायद इतने हजारों सैनिकों की हमें शहादत देने की नौबत नहीं आती। तो बिल्कुल सरकार का, राजनैतिक नेतृत्व का इस देश के, प्रधानमंत्री महोदय, गृह मंत्री महोदय, रक्षा मंत्री महोदय, थल सेना के अध्यक्ष, सभी सैनिक सभी को बधाई बनती है। पूरे देश में एक शान का, ऐसा लग रहा है जैसे कन्धों से बोझ उतर गया हो, एक बोझ में जी रहे थे, क्योंकि ऐसे लग रहा था दुबारा वही यू. एन. हमें जाएंगे, अमेरिका में जाएंगे, वहां जा-जा के भाषण देंगे, बार-बार यही होता था। तो मैंने तो कहा भी था कि अमेरिका पर हमला होता है तो अमेरिका यू. एन. ओ. नहीं जाता, अमेरिका देख लेता है ओसामा बिल लादेन कहां है, वहां जाके... फ्रांस पर हमला होता है, फ्रांस यू. एन. ओ. नहीं जाता, ब्रिटेन में हमला होता है, रूस में हमला होता है, कोई यू. एन. ओ. नहीं जाता। तो ऐसा डर आ गया था कि क्या फिर से वही यू. एन. ओ., अमेरिका, चीन उन्हीं के पास जा-जा के अपना रोना रोएंगे! उम्मीद बढी है, आशा जगी है, विश्वास जगा है कि भारत बदला लिया करेगा। बहुत बड़ा ऐतिहासिक कदम कि हमारी सेना वापस बार्डर के पार जाए, दुश्मन को मारे और वापस आए और ये बता दे कि तुम जहां भी छुपे हो... लेकिन

ये बात भी है कि ये शुरूआत है। पाकिस्तान जितना दुष्ट है, पाकिस्तान जितना....ठग जिसे बोलते हैं, बदमाश किस्म का देश है, वो अपनी शरारतें बंद नहीं करेगा, तो इस संकल्प के साथ-साथ ये अपील, ये प्रार्थना कि जब भी भारत पर कोई हमला हो तो अब जवाब हमेशा ऐसे ही दें, जब भी दुश्मन आंख उठाए, जब जवाब हमेशा ऐसा ही दें। ये एक बार बन के ना रह जाए। अब जब तक आतंकी शिविर खत्म ना हो, दुश्मन अभियान रोके नहीं, अब पूरा देश साथ खड़ा है, दिल्ली के मुख्यमंत्री माननीय अरविंद केजरीवाल जी ने ये कहा कि सेना के साथ पूरा देख खड़ा है, पूरा भारत एक है, कोई विपक्ष नहीं, कोई सत्ता पक्ष नहीं, एक हो के पूरा हिंदुस्तान खड़ा है, बस अब ये अभियान रूकने न पाए, अब ये एक झलक बन के न रह जाए, अब भारत माता की जो शक्ति है, हिंदुस्तान की जो इच्छा शक्ति है, अब ये अभियान आतंकियों के खात्मे तक चलता रहे, बहुत-बहुत शुक्रिया, धन्यवाद, जयहिंद।

अध्यक्ष महोदय : आदरणीय गोपाल राय जी।

श्रम मंत्री (श्री गोपाल राय) : अध्यक्ष महोदय, देश के सैनिकों के साथ-साथ देश के माननीय प्रधानमंत्री जी को इस निर्णय लेने के लिए बधाई देने के साथ-साथ आज के मौके पर दो-तीन बात मैं जरूर कहना चाहता हूं कि इस देश का जो दर्द है, वो आतंकवाद है। उरी का हो, पठानकोट का हो या उसके पहले एक लंबी फैहरिश्त है। ये देश, इस देश का सैनिक, इस देश की मां, इस देश की बहन, हर कोई इसका समाधान चाहता है। समाधान की दिशा में एक निर्णायक कदम सेना और सरकार की तरफ से जो उठाया गया है, इससे पूरे देश को तसल्ली मिली है। लेकिन इससे आतंकवाद का संपूर्ण समाधान हो जाएगा, ऐसी बात नहीं है क्योंकि जब भी इस देश

के ऊपर आतंकवादी हमला होता है, वो हमला पाकिस्तान करवाता है, पाकिस्तान की तरफ से होता है, ये सब जानते हैं लेकिन ये भी जानते हैं इतिहास है कि पहले भी पाकिस्तान के ऊपर हमले हुए हैं, चाहे वो कांग्रेस की सरकार रही हो, उस समय की बात हो, चाहे अटल जी के समय की बात हो, पाकिस्तान के ऊपर हमले हुए हैं, चाहे वो कांग्रेस की सरकार रही हो, उस समय की बात हो, चाहे अटल जी के समय की बात हो, पाकिस्तान के ऊपर हमले हुए थे, कारगिल का युद्ध हुआ था, समाधान नहीं हो पाता। आज जब पूरे देश के अंदर जैसा कपिल भाई ने कहा कि पूरे देश के अंदर जब सर के ऊपर से पानी गुजरने लगा, पठानकोट को लोगों ने बर्दाश्त कर लिया, वहां से जब आई. एस. आई. के लोग आ करके जांच करने के लिए हमारे अंदर घुसे, लोगों ने बर्दाश्त कर लिया, लेकिन उड़ी की घटना के बाद पूरे हिंदुस्तान का दिल रो रहा था और सब पूछ रहे थे आखिर इस देश में कुछ होगा या नहीं होगा और पूरे देश के अंदर एक जन दबाव पैदा हुआ और उस दबाव के अंदर सरकार ने यह निर्णय लिया है, इसका पूरा देश स्वागत इसलिए कर रहा है कि जो लोग चाहते थे कि इसका जवाब दिया जाए, इस दिशा में कदम बढ़ाया गया। लेकिन मसला यहां रूकने वाला वाला नहीं है, अध्यक्ष महोदय। क्योंकि जो कुछ भी पाकिस्तान की तरफ से जो अधिकृत पाकिस्तान है, जो हमारा भारत का अधिकृत हिस्सा है, उसमें जो कुछ भी घटित हो रहा है, उसमें पाकिस्तान भी जिम्मेदार है, चाईना का दबाव आएगा। हमारी सरकार के ऊपर चाईना का दवाब आएगा। सरकार को इस बात को भी सोचना है कि देश को खड़ा करने के लिए इस मादरे वतन के तिरंगा के लिए लड़ना है या अमेरिका के सामने झुकना है। हमें देश के तिरंगा को आगे बढ़ाना है, सैनिकों की मान-मर्यादा को आगे बढ़ाना है या चाईना के सामने झुकना है।

ये मसला इतना सिम्पल नहीं है। इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि बधाई देने के साथ-साथ प्रधानमंत्री जी को कि पूरा देश आपके साथ खड़ा है, देश के इन आतंकवादियों के... पाकिस्तान के हमारी लड़ाई कोई व्यक्तिगत लड़ाई नहीं है। पाकिस्तान के एक मजदूर के साथ हमारी लड़ाई नहीं है, पाकिस्तान की एक आम महिला के साथ हमारी लड़ाई नहीं है लेकिन इस देश के अंदर जो आतंकवादी हमले हो रहे हैं या हमारे सैनिकों के ऊपर हमले हो रहे हैं, उसके लिए हमें खड़े होने की जरूरत है और मुझे इस बात का फख्र है कि आज पूरा देश इस बात से चिंतित है। इस देश का इतना दबाव बना है सोशल मीडिया पर... हमारे विजेन्द्र गुप्ता जी ने ये बात कही कि उस घटना के बाद से, पठानकोट के बाद क्या हुआ, पूरा देश जानता है। जब आई. एस. आई. की जांच वहां बिठाई गई, पूरे देश ने विरोध किया था, फिर भी बुलाया गया। उड़ी की घटना के बाद पूरा देश चिल्लाता रहा और सरकार चुप बैठी रही। प्रधानमंत्री जी का आपने जिक्र किया और आप भी थे केरल में, प्रधान मंत्री जी कम्पीटिशन चला रहे थे कि तुम भी निरक्षरता से लड़ो, हम भी निरक्षरता से लड़ेंगे। तुम गरीबी से लड़ो हम भी गरीबी से लड़ेंगे। तुम अपनी स्थिति से लड़ो हम इससे लड़ेंगे। सवाल जब... उड़ी के अंदर सैनिकों की मौत से, जब उनकी विधवाएं विलाप कर रही थी, उस समय कम्पीटिशन इसका नहीं था कि वो निरक्षरता से लड़ें और हम निरक्षरता से लड़ें। देश यह उम्मीद कर रहा था प्रधानमंत्री जी निर्णय सुनाएं। मैं कहता हूं देर आए दुरूस्त आए। लेकिन अगर जो ये निर्णय हुआ है, आतंकवाद अगर हमारे ऊपर हमला करता है तो हमें मुंह तोड़ जवाब देना पड़ेगा और मैं मानता हूं कि भारत के पास इतनी ताकत है कि चाहे चाईना आ करके खड़ा हो जाए, चाहे अमेरिका का लालच आ करे खड़ा हो जाए, चाहे पाकिस्तान खड़ा हो जाए, हिंदुस्तान अपने

मादरे वतन की सुरक्षा के लिए अपनी ताकत रखता है और हिंदुस्तान की आवाम ताकत रखती है। सरकार अगर पीछे हटती है तो आवाम अपने देश को बचा सकती है। आजादी की लड़ाई में हिंदुस्तान के आवाम ने लड़ाई लड़ी थी, अंग्रेज लड़ाई नहीं लड़ रहे थे हिंदुस्तान को आजादी दिलाने के लिए। इसलिए बधाई देने के साथ-साथ मैं निवेदन भी करना चाहता हूं माननीय प्रधानमंत्री जी से कि किसी तरह का दबाव आता है, चाहे अमेरिका का आए, चाहे चाईना का आए, हमें झुकने की जरूरत नहीं है। ये मादरे वतन के सपूतों के लिए हमें सर्वोच्च निर्णय लेने में सर्वोपरि रहना पड़ेगा। आर्थिक संबंधों को निपट लेंगे हम बाद में अगर हमारे देश के वीर जवान सुरक्षित रहेंगे। मैं इन्हीं बातों के साथ उन सारे शहीदों को और उनके परिवारों को नमन करता हूं और एक बात जरूर कहना चाहता हूं जो जवान शहीद हुए उड़ी के अंदर, आज जान पर खेलकर के हमारे जवानों ने जाकर के वहां पर स्ट्राइक किया। हमारे जवानों की अगर आगे शहादत होती है, उनके परिवारों की जिम्मेदारी लेना ये सरकार की, हुकूमतों की जिम्मेदारी है और मैं यह प्रस्ताव रखना चाहता हूं कि जिस तरह से दिल्ली के अंदर कोई भी सैनिक हो, चाहे सिपाही हो अगर नागरिक के हिफाजत में और देश की हिफाजत में कुर्बानी देता है तो उसके परिवार के सम्मान स्वरूप एक करोड़ रूपया देने का जो निर्णय लिया है, ये सदन की तरफ से मैं चाहता हूं अध्यक्ष महोदय, कि ये देश इस बात की गारंटी करे कि इस मादरे वतन के लिए कोई भी सपूत अगर कुर्बानी करता है तो उसके परिवार को चलाने की जिम्मेदारी हमारी हुकूमतें लेगी जिससे जवानों का हौसला और बढ़ेगा और हिंदुस्तान के लिए वो कुर्बानी देने के लिए प्रोत्साहित होंगे, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : अब श्री माननीय मुख्य मंत्री श्री अरविंद केजरीवाल द्वारा प्रस्तुत संकल्प सदन के सामने है;

जो इसके पक्ष में है वो हां कहें। (सदस्यों के हां कहने पर)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अमेंडमेंड जो दिया है, उसको ऐड कर रहै हैं ना? जो ये प्रस्ताव आया है, उसमें एक अमेंडमेंट दिया गया है।

अध्यक्ष महोदय : नहीं। मैंने सुना है अमेंडमेंट आपका।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : बस इतना ही मैं जानना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : नहीं। अमेंडमेंट को ऐज इट इज, जो प्रस्ताव है, वो मैं सदन के सामने रख रहा हूं। माननीय मुख्य मंत्री जी ने वो प्रस्ताव रखा हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मुख्यमंत्री जी का प्रस्ताव सदन के समक्ष है। हमारा अमेडमेंट है। या तो अमेडमेंड एक्सेप्ट कर लीजिए या गिरा दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, अमेडमेंट एक्सेपेट नहीं कर रहा हूं मैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : नहीं, वो वोटिंग करा लीजिए न उस पर आप।

अध्यक्ष महोदय : किस पर?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अमेडमेंट पर।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, अमेडमेंट पर वोटिंग क्यों कराएंगे?

श्री विजेन्द्र गुप्ता : क्यों? अमेडमेंट पर तो वोटिंग ही जब प्रस्ताव आया है सैक्शन 90 में।

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, बात सिर्फ प्रधानमंत्री जी की नहीं है। बात तो फिर रक्षा मंत्री जी की भी है। पूरी केबिनेट की है। देश के सेंटर में बैठे तमाम अधिकारियों की है और तमाम सैनिक अधिकारियों की, सेनाध्यक्ष की है। सब का डाल देते हैं कि सब को बधाई देते हैं। सब को डाल देते हैं इसमें अमेंड करके कि सेना को तो है ही।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : माननीय मुख्य मंत्री जी। एक सैकेंड विजेन्द्र जी। विजेन्द्र जी, उनको बात बात तो पूरा करने दो। आपकी ये बड़ी दिक्कत है।

मुख्यमंत्री जी : इस बात को आगे बढ़ा रहे हैं। प्रधानमंत्री जी, केंद्र सरकार गृह मंत्री जी, डिफैंस मिनिस्टर और सेना प्रमुख हैं, जितने हैं और उन सबका धन्यवाद करते हैं। इस को एक लाईन और...

अध्यक्ष महोदय : माननीय मुख्य मंत्री जी ने और उप मुख्य मंत्री जी ने जो अभी संशोधन दिया है, उस संशोधन को इसमें जोड़ते हुए, अब यह संकल्प सदन के सामने प्रस्तुत है;

जो इसके पक्ष में है वे हां कहें

जो इसके विरोध में हैं वे ना कहें

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता।

संकल्प सर्वसम्मिति से पारित हुआ, धन्यवाद।

सदन पटल पर प्रस्तुत कागजात

अब श्री सत्येंद्र जैन, माननीय ऊर्जा मंत्री दिल्ली ट्रांसको लि. के वर्ष 2014-15 हेतु आर्थिक वार्षिक प्रतिवेदन की प्रति सदन पटल पर रखें।

श्री सत्येंद्र जैन (ऊर्जा मंत्री) **:** अध्यक्ष महोदय, मैं दिल्ली ट्रांसको लि. डीटीएल की वर्ष 2014-15 की वार्षिक रिपोर्ट सदन में प्रस्तुत करने की इजाजत चाहता हूं।[1]

ध्यानाकर्षण प्रस्ताव (नियम-54)

अध्यक्ष महोदय : नियम 54 के अंतर्गत श्री राजेंद्र पाल गौतम माननीय सदस्य दिल्ली में विषाणु-जनित बीमारियों के फैलने के संबंध में सदन का ध्यान आकर्षित करेंगे। श्री राजेन्द्रपाल गौतम जी।

श्री राजेन्द्र पाल गौतम : धन्यवाद अध्यक्ष जी। मैं आपके माधयम से सदन का ध्यान दिल्ली में फैली मलेरिया, चिकनगुनिया, डेंगू से जो महामारी की स्थिति पैदा हुई है, उसकी तरफ सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। माननीय अध्यक्ष जी, हम अगर पिछले सालों के अनुभव को देखें तो हम ये पाएंगे कि ये जो बीमारियां हैं, ये मुख्य रूप से मच्छर की वजह से फैलती है और मच्छर गंदगी की वजह से फैलता है। 1960 के दशक तक श्री लंका के अंदर मलेरिया से पूरे विश्व में सबसे ज्यादा मौतें होती थी। लेकिन श्री लंका ने, इतना छोटा सा देश होते हुए भी बाद के 10 साल के अंदर अपने देश से मलेरिया को हमेशा-हमेशा के लिए खत्म कर दिया। पिछले लगभग 40 सालों में श्री लंका के अंदर एक भी मलेरिया का मरीज नोटिस में नहीं आया है। इससे एक बात तो जाहिर होती है कि अगर हमारे निगम संकल्प के साथ, ईमानदारी के साथ उपरोक्त बीमारियों को खत्म करने के लिए काम करते तो दिल्ली के अंदर इतने बड़े पैमाने पर यह महामारी न फैलती। इतने बड़े पैमाने पर चिकनगुनिया, डेंगू और मलेरिया से मौतें न होती। एम. सी. डी. में फैले

1. पुस्तकालय में संदर्भ सं. आर. 15701 पर उपलब्ध।

भ्रष्टाचार और नाकामी की वजही से लोगों ने एम. सी. डी. के नाना–नाना प्रकार के नाम दिये। कुछ लोग एम. सी. डी. की जब फुल फॉर्म बोलते हैं तो मोस्ट क्रप्ट डिपार्टमेंट बोलते हैं और अब तो पिछले दिनों में जब वो एम. सी. डी. को डिफाइन करते हैं, मलेरिया, एम फार मलेरिया, सी फार चिकनगुनिया, और डीप फॉर डेंगू। इस नाम से भी अब एम. सी. डी. को बोलने लगे हैं। अभी कल अखबार में हमने पढ़ा, कैग ने जो रिपोर्ट दी है, उसने तीनों एम. सी. डी. और एन. डी. एम. सी. को इनके लिए जिम्मेदार ठहराया और उनके द्वारा किये गये कार्यो के रिजल्ट को जीरो के तौर पर आंका। कुल 153.65 करोड़ रूपया खर्च हुआ इन बीमारियों को रोकने के लिए। लेकिन ये बड़े दुख की बात है कि जब ये बीमारी अगस्त के महीने में पीक पर चली गई, उसके बाद एम. सी. डी. ने इसके खिलाफ कार्रवाई करना शुरू किया। जबकि एम. सी. डी. के मलेरिया डिपार्टमेंट पहले से है। जिसका काम ही... जहां भी पानी गलत तरीके से भरा हो या नालियां, उस सब में दवाई छिड़कना होता था। मुझे आज भी याद है, जब मैं छोटा सा था तो मलेरिया विभाग के कर्मचारी नालियों और जो छोटे जोहड़ हो जाते थे, उनके अंदर दवाइयां छिड़कते थे। लेकिन पिछले काफी सालों से एम. सी. डी. का ये मलेरिया डिपार्टमेंट लगभग नक्कारा हो गया है। ये मच्छरों के पलने का इंतजार करता है अगर ये कार्रवाई सितंबर के महीने में शुरू करने की बजाए ये कार्रवाई अगर जुलाई के महीने में शुरू की जाती। जहां–जहां पर बरसात का पानी रूका, वहां पर दवाइयां छिड़की जाती। तो मैं समझता हूं ये डेंगू, चिकनगुनिया के, मलेरिया के खतरनाक मच्छर पैदा ही न होते। लेकिन ये नक्कारा और निक्कमापन एम. सी. डी., का, जिसको पूरे दिल्ली की जनता को झेलना पड़ रहा है, कितनी बड़ी रकम इसके ऊपर खर्च हुई। यहां तक कि दिल्ली सरकार ने भी 66 करोड़ रूपया अलग

से सफाई के लिए दिया। लेकिन आज हम जगह जगह पर दिल्ली के अंदर बड़े-बड़े कूड़े के ढेर देख रहे हैं और जगह जगह खाली प्लाटों में पानी भरा पड़ा है, कूड़े के ढेर पड़े हुए हैं। अभी कल के अखबार की रिपोर्ट है कि साउथ एम. सी. डी. ने खाली प्लाटों में जहां पर कूड़ा करकट जमा है, उनके चालान काटना शुरू किए हैं। मैं पूछना चाहता हूं सदन के माध्यम से कानून पहले से बना हुआ है कि जो भी खाली प्लाट हैं, जिन्होंने अपने मकान को नहीं बनाया, उन प्लाटों के अंदर जहां कूड़ा इकट्ठा है या पानी जमा है, जिन्होंने अपने मकान को नहीं बनाया, उन प्लाटों के अंदर जहां कूड़ा इकट्ठा है या पानी जमा है, ऐसे प्लाटों का चालान काटा जाए, उनको सील किया जाए। तो ये सील करने की और चालान काटने की प्रक्रिया सितंबर के माह के लास्ट में ही क्यों एम. सी. डी. को याद आती है? ये काम तो हमेशा जारी रखना चाहिए। अबर समय रहते एम. सी. डी. काम करती और लगातार प्लाटों में जहां पानी इकट्ठा होता है, उसके अंदर दवाई छिड़कती, बरसात के पानी को इकट्ठा न होने देती और जो घरों के अंदर मलेरिया विभाग के जो कर्मचारी जिनका काम डेंगू के लार्वा को तलाशना था, अगर उस कार्य को जुलाई के महीने में शुरू किया जाता और उसका मॉनिटरिंग सिस्टम होता, उसका सर्वेलांस सिस्टम होता तो मैं समझता हूं ये बिमारी इतने बड़े पैमाने पर न फैलती और दिल्ली की जनता को इतनी बड़ी समस्या को न झेलना पड़ता। ये जो 153.65 करोड़ रूपया तो वो है, जो एम. सी. डी. ने इसपे खर्च किया लेकिन करोड़ों रूपया इस दिल्ली के परिवारों ने अपने इलाज पर और उसके लिए जो खुराक लेनी थी, जो लिक्विड पीना था, उसपे खर्च किया, वो इसमें शामिल नहीं है। उस खर्चे को बचाया जा सकता था, उन नोटों को बचाया जा सकता था।

मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा अध्यक्षजी एम. सी. डी. को बकायदा हिदायत दी जानी चाहिए कि उसका सर्वेलांस सिस्टम होना चाहिए और यहांत क देखने में आया... आपको जान के ताज्जुब होगा कि कुल डेंगू के मामले की रिपोर्ट के लिए 967 यूनिटें बनाई गई और इन 967 यूनिटों में से केवल 29 यूनिट डॉटा रिकॉर्ड कर रही हैं, बाकी रिकॉर्ड ही जमा नहीं कर रहे हैं, कितने शर्म की बात है! इतने बड़े पैमाने पर बीमारी फैल गई। पिछले साल लगभग 450 लोग मारे गए और इस साल भी अभी तक टोटल 43 लोग मारे गए, उन 43 लोगों में टोटल 17 लोग चिकनगुनिया से, 24 लोग डेंगू से और 2 लोग मलेरिया से मारे गए। इन मौतों को रोका जा सकता था लेकिन हमारे एम. सी. डी. के जो डिपार्टमेंट हैं, वो न तो कोई डॉटा तैयार कर रहे हैं, न डॉटा एक-दूसरे को शेयर कर रहे हैं और उनका कोई सर्वेलांस सिस्टम नहीं है, कोई

ऐसा मैकेनिज्म नहीं है कि वो घर जाकर लार्वा चैक कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं कि उसका प्रॉपर कोई रिकॉर्ड मैन्टेन किया जा सके। तो माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माधयम से अंत में सिर्फ इतना कहना चाहूंगा कि एम. सी. डी. अपने नाक्कारापन से बाज आए और जिस तरह सिविक सेंटर के अंदर एक जगह कमर्शियल प्रपज के लिए कैंटीन चलाने के लिए एक रूपया महीने के हिसाब से दे दी गई जिसका किराया एक साल का 6 लाख रूपया कम से कम बनता है ऐसे कामों में तो ये लोग बड़ा इंट्रेस्ट लेते हैं। अपने लोगों को फायदा पहुंचाने के लिए पूरे एरिया के हाउस टैक्स को माफ कर देते हैं। पहले एक को माफ किया। ऑब्जेक्शन लगा तो फिर बाकी का भी माफ किया ताकि उस एक को माफ किया जा सके और जिस तरह से 6 लाख रूपये किराये की जगह एक रूपये पे दे दिया गया, इसपे एंटी करप्शन

ब्रांच इसको दर्ज नहीं करेगी, इसपे कार्रवाई नहीं करेगी और न एम. सी. डी. के खिलाफ कार्रवाई करेगी कि एम. सी. डी. ने इतनी बड़ी रकम जो मलेरिया विभाग पे खर्च हुई, इसको रोकने के लिए क्या कार्रवाई की। इसपे सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। अगर समय रहते कार्रवाई होगी तो मैं ये दावे के साथ कह सकता हूं, अगर ईमानदारी से एम. सी. डी. समय रहते काम करे, पानी को ठहरने न दे और पानी के अंदर दवाइयां छिड़के तो हमेशा के लिए हम लोग दिल्ली के अंदर से डेंगू को, चिकनगुनिया को और मलेरिया को खत्म कर सकते हैं, बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय : भावना गौड़ जी।

सुश्री भावना गौड़ : शुक्रिया अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे नियम संख्या-55 के अंतर्गत बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष महोदय दिल्ली में इस समय डेंगू, चिकनगुनिया और मलेरिया जैसी बीमारियां फैली हुई हैं। बड़ी संख्या में घर-घर में लोग बीमार हैं और विशेष तौर पे चिकनगुनिया ने तो लोगों का जीना हराम कर दिया। अध्यक्ष महोदय, सीधा-सीधा जिम्मेवारी दिल्ली नगर निगम की है लेकिन स्वाभाविक तौर पर जैसे हमारे साथी ने कहा कि एम. सी. डी. की तो परिभाषा ही बदल गई; एम फॉर मलेरिया, सी फॉर चिकनगुनिया, डी फॉर डेंगू आजकल लोग नई परिभाषाओं से एम. सी. डी. की व्याख्या करने लगे हैं।

अध्यक्ष महोदय, अभी भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक यानि केग की एक रिपोर्ट आई उसमें जनवरी 2013 से दिसंबर 2015 का उसकी परफॉरमेंस को ऑडिट किया इस लेखा कमेटी ने। इस रिपोर्ट के अंदर एम. सी. डी. की भूमिका पर केग ने बहुत बड़े-बड़े सवाल अपने आप में खड़े किए हैं।

अध्यक्ष महोदय, रिपोर्ट कहती है कि जिस तरह से मच्छर से होने वाली बीमारियों का कहर बढ़ रहा है, उस लिहाज से ब्रीडिंग और बीमारियों की

रोकथाम के लिए दिल्ली नगर निगम वर्तमान में काम नहीं कर रहा। जबकि फंड की अपने आप में उनको कोई प्रॉब्लम नहीं है। लंबे चौड़े फंड हैं, लंबा चौड़ा पैसा है, लंबी चौड़ी कर्मचारियों की सेना उनके पास में उपलब्ध है। अध्यक्ष महोदय, बीमारियों पर कंट्रोल करने के लिए दिल्ली नगर निगम ने लगभग 150 करोड़ रूपये खर्च किए। लेकिन नतीजा केवल महामारी का बढ़ना। अध्यक्ष महोदय, मैं तो केवल यही कहूंगी कि अगर हम एम. सी. डी. को महामारी फैलाने वाली एक बड़ी संस्था का नाम दें तो अपने आपमें कुछ भी कम नहीं होगा। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली में डेंगू के डंक का कहर भी बहुत बरपा रहा है इन दिनों चिकनगुनिया ने तो सारे रिकॉर्ड ही तोड़ दिए। एम. सी. डी. ने जो आंकड़ प्रस्तुत किए हैं, उसके मुताबिक अभी तक चिकनगुनिया के 1724 मामले प्रकाश में आ चुके और ताजा जारी एम. सी. डी. की रिपोर्ट के अनुसार उनके आंकड़ों के अनुसार राजधानी में बीते सात दिनों के अंदर चिकनगुनिया के मरीजों की संख्या लगभग ढाई गुना ज्यादा हो गई है। मैं कुछ स्टेटिक्स जरूर बताना चाहूंगी एम. सी. डी. का अगस्त के चौथे हफ्ते के अंदर डेंगू के 176 मामले सामने आए और मरीजों की कुल संख्या बढ़ करके 487 हो गई, अगस्त के चौथे हफ्ते के अंदर, सितंबर के पहले हफ्ते के अंदर 284 डेंगू के मामले सामने आए और इन मरीजों की, इस संख्या को मिलाकर मरीजों की कुल संख्या 711 हो गई। वहीं दूसरी ओर देखिए सितंबर के दूसरे हफ्ते में 387 मामले सामने आए और मरीजों की कुल संख्या बढ़कर 1158 हो गई और ये बढ़ते हुए आंकड़े अपने आप में दिल्ली की जनता को वास्तव में हैरान करते हैं। अध्यक्ष महोदय, एम. सी. डी. के पास, मच्छरों से होने वाली बीमारियों से उनको हम कैसे बचाएंगे, इसके लिए कोई प्लॉनिंग, कोई मैकेनिजम उनका

अपने आप में नहीं है। कीटनाशक दवाइयों का वो इस्तेमाल करते हैं, लेकिन कीटनाशक दवाइयों का इस्तेमाल कैसे किया जाएगा। इसके लिए दिल्ली नगर निगम के पास में कोई पालिसी नहीं है। एम. सी. डी. में फॉगिंग मशीनों का इस्तेमाल होता है, स्प्रे का यूज किया जाता है और देखिए मजे की बात अध्यक्ष महोदय, एम. सी. डी. में अब तक 43.65 करोड़ रूपये फॉगिंग पे और स्प्रे के इस्तेमाल करने के लिए उसके ऊपर खर्च किया है जो अपने आप में बहुत बड़ी लागत है! 43 करोड़ 65 लाख रूपये फॉगिंग पे और स्प्रे के इस्तेमाल के लिए एम. सी. डी. ने खर्च कर दिया और इसके अलावा मच्छर पैदा न हो, मादा मच्छर पैदा न करें दूसरे मच्छर को इसके लिए डॉमेस्टिक ब्रीडिंग का काम चलाया और उसके ऊपर लगभग 110 करोड़ रूपये एम. सी. डी. के द्वारा खर्च किए गए। अध्यक्ष महोदय, अप्रैल 2013 से लेके और मार्च 2016 के बीच में जितनी भी कीटनाशक दवाइयां खरीदी गई, उनकी लागत 88.26 करोड़ रूपये है जो एम. सी. डी. के द्वारा खर्च किए गए और क्योंकि इस केमिकल का इस्तेमाल कैसे होगा, उसकी प्लानिंग कैसे होगी, वो कैसे घर-घर तक पहुंचेगा, इसकी कोई पॉलिसी ही नहीं बनाई। इसीलिए मुझे लगता है कि इन सब चीजों पर किया जाने वाला व्यय अपने आप में व्यर्थ हो गया।

अध्यक्ष महोदय, एक सफदरजंग अस्पताल है, दिल्ली सरकार का राष्ट्रीय राजधानी के बीच में। अभी 28 तारीख को वहां एक 8 साल के बच्चे की डेंगू से मौत हुई और सफदरजंग अस्पताल के अंदर 9 लोगों की मौत अब तक डेंगू से हुई है केंद्र का हॉस्पिटल है। देखिए केंद्र सरकार के एक हॉस्पिटल के अंदर 8506 मामले आते हैं जिनकी जांच करने के बाद में लगभग 456 मामले डेंगू पॉजिटिव वॉयरस उनमें है, उसकी रिपोर्ट भारत सरकार देता है। उसके साथ ही 2941 लोगों में चिकगुनिया का वायरस है, इस तरह की कंपलेंट लेकर के लोग आते हैं। जिसमें से 1355 लोगों में चिकनगुनिया का वायरस पॉजिटिव

पाया जाता है। अध्यक्ष महोदय, अब तक कुल 24 मौतों में से एम्स हॉस्पिटल में 9 मौत, सफदरजंग हॉस्पिटल के अंदर 9 मौत डेंगू के कारण से हुई है। जबकि आरएमएल हॉस्पिटल, अपोलो हॉस्पिटल, एलएनजेपी यहां पर 2-2 लोग डेंगू से मौत के शिकार हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय, देखिए, अभी एक बीमारी का हमने नाम लिया चिकनगुनिया लेकिन मुझे लगता है किह मारे सदन में बैठे हुए बहुत सारे साथियों को चिकनगुनिया की परिभाषा नहीं मालूम है। ये चिकनगुनिया अपने आप में एक वायरल बुखार है ऐडिस नाम के मच्छर से होता है; ये हम सब जानते हैं कि इसे पीले बुखार का मच्छर भी कहा जाता है। अध्यक्ष महोदय, चिकनगुनिया बीमारी की शुरूआत 1952 के अंदर अफ्रीका के तंजानिया नाम के देश से हुई। उसके आसपास की कंट्री में ये इस तरह की बीमारी फैली। धीरे-धीरे ये एशिया के बाकी देशों के अंदर भी आ गई और ये चिकनगुनिया अफ्रीकी भाषा का शब्द है अपने आप में। जिसका सीधा-सीधा मतलब होता है। वो जो झुका दे, चिकनगुनिया का मतलब होता है, वो जो झुका दे। तो ये बीमारी अपने आप में ऐसी है। वर्तमान में घर-घर में ये बीमारी फैली हुई है और जिसको चिकनगुनिया नाम की बीमारी होती है उसके सारे शरीर की हड्डियों में दर्द होता है और व्यक्ति मजबूर हो जाता है झुकने के लिए। अध्यक्ष महोदय, इस बीमारी को ठीक होने में भी कई महीनों का समय लगता है। एम. सी. डी. की फैली हुई व्यवस्थाएं, वो इस तरह की बीमारियों को बढ़ावा दे रही हैं। चिकनगुनिया की वजह से अब तक लगभग 17 लोगों की जान गई है। गंगा राम अस्तपाल में चिकनगुनिया के लगभग 550 मरीज और डेंगू के 72 मरीज इलाज करवाने के लिए पहुंचे जिनमें से चिकनगुनिया के 203 मरीज और डेंगू के 55 मरीजों को गंगाराम हॉस्पिटल में एडमिट किया गया और फिलहाल वर्तमान

की रिपोर्ट मैं सदन को देती हूं कि वहां पर 33 मरीज चिकनगुनिया के एडमिट हैं और 9 मरीज डेंगू के एडमिट हैं, गंगाराम हॉस्पिटल में। ठीक इसी तरह से हिंदू राव हॉस्पिटल में 670 मरीज चिकनगुनिया के आए जिनमें से 251 मरीजों में चिकनगुनिया का वायरस है, ये पाया गया। कस्तूरबा गांधी अस्पताल में 177 लोगों में से 43 लोगों में ये वायरस पाया गया, हिंदूराव हॉस्पिटल में 1826 मरीजों में से 73 मरीजों में इस वायरस के होने की पुष्टि की गई। कस्तूरबा गांधी अस्पताल में डेंगू के मरीज गए और वहां पे लगभग 642 मरीज पहुंचे और उनमें से 52 लोगों में डेंगू वायरस पाया गया।

अध्यक्ष महोदय, भारत में डब्ल्यूएचओ के हमारे प्रतिनिधि उनके रहे मि. है वैक्टर नाम है उनका और उन्होंने जो भारत में स्वास्थ्य को लेकर के जो प्रणाली फैली हुई है, जो व्यवस्थाएं हैं, उनको लेकर के उन्होंने डब्ल्यूएचओ की मीटिंग में निंदा कीं और उन्होंने ये कहा कि निजी क्षेत्र के अस्पताल और संस्थानों की सूचना निजी क्षेत्र के अस्पताल, प्राइवेट अस्पताल, सरकारी हॉस्पिटल्स से ये सूचनाएं जुटानी चाहिए और इस तरह के फैल रहे संक्रमणको हम उससे लोगों को कैसे बचा सकते हैं, किस प्रकार से जागरूकता अभियान चला सकते हैं, लोगों को इस तरह से होने वाली बीमारियों से किस तरह से बचाव के लिए सरकार या निजी संस्थान किस तरीके से काम कर सकती है ओर काम कर रही है, दोनों का आंकलन होना चाहिए तथा उनके कामों की पुष्टि होनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : कनक्लूडक कीजिए भावना जी, प्लीज।

सुश्री भावना गौड : डब्ल्यू. एच. ओ.की रिपोर्ट के अनुसार देश में अब तक 36110 लोग, मैं पूरे भारतवर्ष की बात कर रही हूं। डब्ल्यू. एच. ओ. की रिपोर्ट के अनुसार देश में अब तक 36110 डेंगू से प्रभावित मामले सामने

आए हैं जिसमें से लगभग 70 लोगों ने जान दे दी है और राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 18 लोग डेंगू से मौत के शिकार बने हैं पूरे भारतवर्ष में। देश में चिकनगुनिया के 14656 मामले प्रकाश में आए जिसमें से लगभग 12 लोग मौत के शिकार हुए।

अध्यक्ष महोदय, अपनी बात को खत्म कर रही हूं। श्रीलंका जैसा छोटा सा देश, भयंकर त्रासदी की तरह से बीमारी फैली मलेरिया नाम की बीमारी लेकिन श्रीलंका की सरकार ने और वहां रहने वाले नागरिकों ने एकजुट होकर परिचय दिया और इस महामारी को अपने देश से समाप्त करेंगे, इस बात का प्रण लिया और लगभग श्रीलंका भी आज के समय में 90 जो देशों की सूची है, उस सूची में उसने अपने-आप अपना नाम दर्ज करवाया है। श्रीलंका में आज के समय में मलेरिया का एक भी पेशेंट नहीं देखा जाता। अध्यक्ष महोदय, अब दिल्ली की बात करें तो एम. सी. डी. के पास में बकायदा एम. सी. डी. एक विभाग है, उसका अपना एक विभाग है जो हैल्थ की प्रॉब्लम्स को लेकर के काम करता है। लगभग 4 हजार की संख्या में मलेरिया कैसे दूर करेंगे डेंगू को कैसे भीगायेंगे, चिकनगुनिया का इलाज कैसे करेंगे, उसके लिए उनके पास में लगभग 4 हजार की संख्या में वहां कर्मचारी मौजूद हैं और सालाना बजट 78 करोड़ रूपये का है यानि ना पैसे की कमी न कर्मचारियों की कमी और कमी है तो केवल नीयत की कमी है। आज जिस तरह से दिल्ली सरकार के मुख्यमंत्री साहब ने उन कामों को अपने हाथ में लिया है, एम. सी. डी. फॉगिंग नही कर रही है। लेकिन दिल्ली सरकार में लगे हुए लोग, दिल्ली सरकार में आम आदमी पार्टी के जो वालिंटियर्स हमारी सरकार में लगे हुए लोग, दिल्ली सरकार में आम आदमी पार्टी के जो वांलिंटियर्स हमारी सरकार के साथ जुड़े हैं, उन सब लोगों के द्वारा दिल्ली के अंदर एक अभियान

चलाया गया है और हम सब लोग बधाई के पात्र हैं, दिल्ली के मुख्यमंत्री साहब, दिल्ली के उप मुख्यमंत्री साहब, दिल्ली के हेल्थ मिनिस्टर, हमारे सत्येंद्र जी जिन्होंने अस्पतालों में काम करने वाले अधीक्षकों को ये आदेश दिया कि दिल्ली के किसी भी अस्पताल में ऐसी भयंकर बीमारी से पीड़ित कोई भी व्यक्ति आएगा, कोई भी मरीज आएगा, उसका इलाज अस्पताल में रहकर के किया जाएगा और इसके बाद में मैं आप सभी को बताना चाहूंगी कि दिल्ली सरकार के द्वारा हेल्पलाइन नंबर जारी किए गए हैं और दिल्ली सरकार और दिल्ली सरकार के सभी विधायक और आम आदमी पार्टी के सभी वालिंटियर्स इस महामारी को दिल्ली से खत्म करने के लिए जिस तरह से एकजुटता का परिचय दे रहे हैं, वो सब बधाई के पात्र हैं, बहुत–बहुत धन्यवाद, जय भारत।

अध्यक्ष महोदय : श्री नितिन त्यागी जी।

श्री नितिन त्यागी : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय। एक बहुत ही इम्पार्टेन्ट मुद्दा है, चिकनगुनिया का या डेंगी का, उस पर बोलने का आपने मौका दिया। भावना बहन ने जो स्टैटिक्स एक्चुवली जो सबके सामने रखी, वो बहुत ही सराहनीय तो है ही लेकिन उसको सुन के दिल दहल जाता है! इस तरीके से शायद कुछ लोगों की लापरवाही रही। पूरा का पूरा दिल्ली सफर कर रहा है। वैसे तो सफर आज की तारीख में चिकनगुनिया या डेंगी की अगर बात करें तो पूरा देश ही कर रहा है। कहीं की भी बात करें। राजस्थान अक्सर जाना होता रहता है या किसी भी और प्रदेश की बात करें तो हर जगह चिकनगुनिया के और डेंगी के केसेज इसी तरीके से फैले हुए हैं, पर दिल्ली देश की राजधानी है। जितनी भी सुविधा दिल्ली में उपलब्ध हैं, वो और कहीं नहीं हैं। मैं मेरठ का रहने वाला हूं। मेरठ में किथौर एक गांव पड़ता है। अगर

वहां का बताऊं हाल तो जो फिजियोथेरेपिस्ट हैं उस गांव में, आजकल उसी की चल रही है। क्योंकि चिकनगुनिया का इलाज और डेंगी का इलाज वही कर रहा है और सत्येंद्र जी आपको जानकर बड़ी हैरानी होगी कि जिसको भी आपका इलाज चिकनगुनिया का या डेंगी का कराना है, वो अपनी खाट और अपना बांस लेके जाता है। खाट, उसके जो भी क्लीनिक हैं, उसके सामने डालता है और बांस वहीं पर गाड़ता है तथा उसी में कील लगवा के उसे ड्रिप चढ़ती है। ये हालत है और प्रदेशों की पर दिल्ली की हालत ऐसी नहीं है। दिल्ली की बहुत अच्छी स्थिति है पर चिकनगुनिया और डेंगी, दो ऐसे शब्द बन गये हैं आज की तारीख में जिनको सुन के दिल दहल जाता है! किसी बच्चे को हो, किसी बुजुर्ग को हो, पूरा का पूरा परिवार परेशान होता है। लेकिन ये जो महामारी का रूप लिया है इस साल बहुत ज्यादा, उसमें बहुत लापरवाही रही। उसकी एक ही वजह है। लेकिन ये जो ब्रीडिंग को रोकने के लिए या लोगों को टोकने के लिए हम लोग आये दिन खबर सुनते हैं कि विद्या बालन को चिकनगुनिया हो गया और शहीद कपूर का चालान कट गया क्योंकि उसके स्वीमिंग पुल में ब्रीडिंग हो रही थी। बी. एम. सी. के लोग जाते हैं। पता नहीं, हमारी दिल्ली के एम. सी. डी. के लोग क्यों नहीं जाते हैं लोगों के घरों में चैक करने कि ब्रीडिंग वहां पर हो रही है या नहीं हो रही है? वैसे पता है, वजह ये है कि लोगों को मॉनिटर करने वाला कोई नहीं है। किसी का इंटरेस्ट नहीं है मॉनिटर करने में कि ब्रीडिंग को चेक करने के लिए लोग जाते हैं या नहीं जाते हैं।

मैं लक्ष्मी नगर का विधायक हूं। लोगों से बात करता हूं। जनता से बात करता हूं। पूछता हूं उनसे कि कोई आया था टोकने के लिए? जनता को जागरूक करने के लिए खुद भी कोशिश करता हूं। वालंटियर्स से भी बात

करता हूं। उनसे भी कहता हूं कि कोशिश करें। बात करें। जागरूक करें लोगों को। लेकिन एम. सी. डी से कोई भी आदमी ये ब्रीडिंग को चेक करने के लिए घरों में नहीं जाता है जबकि उनका ये काम है। एम. सी. डी. के जो मलेरिया डिपार्टमेंट के लोग हैं जिनकी ये जिम्मेदारी है। उन लोगों से बात करी तो उन लोगों ने कहा कि जी, बीस साल पहले हमारी भती की गयी थी और सारे के सारे हम एडहॉक हैं। आज तक दस हजार रूपये ही तनख्वाह है। पहले लक्ष्मी नगर सिंगल स्टोरी हुआ करता था। आज 6-6 मंजिल बन गया है। ये पूरी की पूरी जो 6-6 मंजिल बनी है। ये भी सारी की सारी अनाधिकृत तरीके से बनी हैं। किसी का नक्शा पास नहीं है और सारी की सारी एम. सी. डी. के पार्षदों ने पैसे खाके बनवाए। सर, ये पूरी की पूरी सीक्वेन्स सुनियेगा। आप समझियेगा कि कहां से लापरवाही शुरू हो रही है और कहां पर जा रही है! एक आदमी का लालच किस तरीके से पूरे के पूरे क्षेत्र को तबाह करने पर लग जाता है। वो लालच हर फ्लोर पर पैसे कमाने का भी हो सकता है और वो लालच चुनाव में हार का बदला लेने का भी हो सकता है। हो सकता है, कह नहीं रहा कि है, पर हो सकता है। उन लोगों ने जब एम. सी. डी. के लोगों से बात की कि आप लोग क्यों नहीं जाते तो उन्होंने कहा कि जी, अब तक दस हजार रूपये तनख्वाह होती थी पर वो पूरी की पूरी मिलती थी। इस साल से उसमें पी. एफ. भी कटना शुरू हुआ है और ई. एस. आई. का भी कुछ फंड कटना शुरू हुआ है और वो अब आठ हजार आठ सौ रूपये के करीब हमें मिलता है। चालीस-पैंतालीस साल हमारी उम्र हो चुकी है। अधेड़ उम्र तक पहुंच गये हैं। हम लोग को परमानेंट करने की कोई भी कोशिश नहीं की जा रही है। अब इतने पैसे में तो इतना ही हो पायेगा। इतना समय हम दे नहीं पाते। तो सर, चिगनगुनिया का तो हाल ये

है या डेंगू का हाल ये है कि जब तक लोगों को जागरूक नहीं किया जायेगा, ब्रीडिंग को चेक नहीं किया जायेगा, लोगों के घरों को चेक नहीं किया जायेगा, ब्रीडिंग ग्राउंडस को चेक नहीं किया जायेगा, गंदगी को साफ नहीं किया जायेगा... अब एम.सी.डी. के स्कूल्स हैं। वो तो इन्हीं के ही हैं। वहां से प्रिसिंपल फोन करके आज की तारीख में विधायकों को फोन करके कहते हैं जी कि फॉगिंग करवा दो। ये एम.सी.डी. वाले तो कर नहीं रहे हैं। ये बहुत शर्मनाक बात है! ये प्रिप्लान तो नहीं है? कई बार ऐसा लगता है कि ये पूरा का पूरा प्लान बनाके किया जा रहा है। बाकी सब जगह तो हम लोग कर रहे हैं लेकिन अगर एम. सी. डी. के स्कूल हो गये, एम. सी. डी. की डिस्पेंसरी हो गयी, अगर वहां की भी जिम्मेदारी ये लोग नहीं ले रहे हैं तो सर, कौन जिम्मेदारी लेगा? इसमें आप खुद सोच के देखिए कि यहां पर जो रेन्टेड इन्क्रोचमेंट से क्या रहा कि नालियां लोग बंद कर देते हैं, धीरे-धीरे अपने घर को आगे कर लिया। नालियां, गलियों में से गायब हो गयीं। कुछ तो जेन्युइन प्रॉब्लम है कि सालों से नालियों की सफाई नहीं हुई। वो सिल्ट इतना जमा हो गया कि अब वो पुख्ता हो चुका है और नाली बिल्कुल बंद। जब बारिश होती है तब पानी नालियों में भरता है। नाली का पानी अगर नहीं जायेगा, मुहल्ले का पानी नही जायेगा तो फिर मच्छर पैदा होंगे। कुछ जगह पर इस गंदगी से परेशान होकर के लोगों ने थड़े बनवा लिये। कुछ लोगों ने पैसे लगाकर मार्बल के, ग्रेनाईट के थड़े बनवा लिये। इसको, इन ठगों को रोकने की जिम्मेदारी एम.सी.डी. की थी। पर उस मुहल्ले के नेता ने बनवाये हैं। वोट इफेक्ट होते हैं तो थड़े नहीं तुड़वाये गये, नालियां खुलवायी नहीं गयी। नालियां साफ नहीं करवायी गयीं। आज हर गली के अंदर पानी भरता है। जब बारिश होती है... सिर्फ लक्ष्मी नगर की बात नहीं कर रहा हूं सर, आज शाहदरा में, आपके यहां भी है ऐसा

हाल! हर गली के अंदर पानी भरता है। उस पानी को निकालने का कोई मैकेनिज्म नहीं है। पानी जमा न होने दें, इसके पोस्टर तो लगाते हैं। पर पानी को निकालेगा कौन, इसका पोस्टर कौन लगायेगा? इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा? सर, ये बिल्कुल अनप्लान्ड है। कोई प्लानिंग नहीं है। प्लानिंग क्या नहीं है कि बारिश होगी... बारिश से पहले किस तरीके से हम लोगों को कदम उठाने हैं... हम क्या वेट करते रहेंगे कि बारिश होगी तो ज्यादा होगी तो ज्यादा चिकनगुनिया होगा। कम हुई तो शायद न हो। हम इसकी वेट क्यों करते हैं! हम लोग उससे पहले से ये कदम क्यों नहीं उठाते कि नालियां साफ हो गयी हैं कि नहीं हुई हैं। कूड़ा तो कहीं पर नहीं हो गया है। जो प्रिवेन्टिव छिड़काव होता है, वो ठीक से हो रहा है कि नहीं हो रहा है। उसकी कोई रिपोर्ट होती है कि नहीं होती है। इन सब चीजों पर हमारी कोई प्लानिंग नहीं है। प्लानिंग क्यों नहीं है? प्लानिंग इसलिए नहीं है क्योंकि हमारे पास विजन नहीं है। हम दिल्ली को कैसा देखना चाहते हैं। हम अपनी कॉस्टिट्यूएन्सी को कैसा देखना चाहते हैं। हम अपनी गली को, अपने मुहल्ल्ले को, अपने घर को कैसा देखना चाहते हैं। ऐसा कोई विजन नहीं है। जब तक विजन नहीं होगा तब तक प्लानिंग नहीं आयेगी। क्या किसी प्रकार का ऐसा कोई विजन है कि दिल्ली को डेंगू फ्री करना है या दिल्ली को चिकनगुनिया फ्री करना है या दिल्ली को मच्छर फ्री करना है? इस तरीके का कोई विजन है हमारा? उसके ऊपर काम करें तो जब विजन होगा, तब प्लानिंग निकल के आयेगी। बिना विजन के कोई प्लानिंग नहीं होती। हमने किया? किस तरीके की कोशिश करना चाहते हैं? हम किस राह पर चलना चाहते हैं? क्या हमारी मंजिल होनी चाहिए, ऐसी कोई प्लानिंग नहीं है, हम लोगों की। यह क्यों नहीं है? प्लानिंग नहीं है क्योंकि विजन नहीं है और विजन इसलिए नहीं है क्योंकि नीयत नहीं है। नीयत नहीं

है कि हम किसी भी तरीके से और लोगों के लिए कोई काम नहीं करें। नीयत नहीं है कि हम किसी भी तरीके से और लोगों के लिए कोई काम करें। कहने को तो लोग राजनीति में इसलिए आते हैं कि हम समाज सेवा करना चाहते हैं, हम लोगों का भला करना चाहते हैं, अपने आस-पड़ोस को अच्छा करना चाहते हैं, लोगों की सहायता करना चाहते हैं, पर ऐसा कुछ नहीं है। यह सिर्फ भाषणों से होकर रह जाता है, मेनिफैस्टो में होकर रह जाता है। नीयत वही आकर खत्म हो जाती है। जिस दिन वो कुर्सी अपने नीचे आ जाती है। कुर्सी नीचे आने के बाद में नीयत सिर्फ यह रह जाती है कि किस गली में, किस जगह पर, कितने पैसे कमाने का जुगाड़ बन जाये। हम लोग इसके आगे और कुछ न हीं सोचना चाहते हैं। कितने पैसे देकर टिकट लिये थे और कितने पैसे पांच साल में वसूलने हैं, यह हमारी नीयत हो जाती है। किसी भी तरीके से दूसरे लोगों को कैसे नीचा दिखाना है, उनके काम को कैसे गलत बताना है, अपनी नालायकियों को कैसे छिपाना है, यह नीच तरह जाती है, सिर्फ इतनी सी राजनीति रह जाती है। हम लोगों ने अभी कुछ दिन पहले सर... कन्क्लूड भी करूंगा। हम लोगों ने अभी कुछ दिन पहले एक अभियान शुरू किया था। 'प्वाइंट पर कचरा, स्पॉट पर कचरा' ये अभियान शुरू किया था और जहां-जहां कचरा था, वहां-वहां पर हम लोगों ने स्टीकर लगाये और सब लोगों ने लगाये। मैंने भी लगाये। टी. वी. चैनल में भी कुछ ने दिखाया, कुछ ने नहीं दिखाया। फोटोग्राफ्स सब लोगों ने दिखाई, सब लोगों ने डाला। वो इसलिए डाला एक जागरूकता का अभियान था कि कचरा कहां-कहां पर हो सकता है, सत्ता में एम. सी. डी. वाले पार्षद जब से आये हैं, उन्हें कचरा दिखना बंद हो गया हो तो हम लोग मदद कर देते हैं, हम दिखा देते हैं कि जहां-जहां ये लाल स्टीकर लगे हैं, यहां पर कचरा पड़ा

हुआ है, आप साफ करवा दीजिए। वो स्टीकर तो साफ हो गये पर कचरा साफ नहीं हुआ! ये नीयत है इन लोगों की। स्टीकर एक दीवार से मेटिक्युलसली साफ हो गये, बड़े सिस्टेमेटिक तरीके से स्टीकर उखाड़ दिये गये, पर उसके नीचे का कचरा आज भी वहीं पर पड़ा हुआ है। इन लोगों से क्या उम्मीद कर सकते हैं सर! 66 करोड़ रूपये एम. सी. डी. के इंस्पेक्टर से बात की गई तो यह पाया गया कि सितंबर के पहले हफ्ते तक तो 25 परसेंट दवा जो पिछले सालों में खरीदी जाती थी, उसकी 25 परसेंट दवा भी नहीं खरीदी गई थी। मतलब इंटेंशनल था, कोशिश थी कि ये फैलने दिया जाये। सर, हम लोग बात करते हैं कोऑपरेटिव फैडरलिज्म की। हम लोग साथ में मिलकर काम करना चाहते हैं। हम लोग बात करते हैं सब लोगों से कि भई, चलिए कहीं पर भी प्रॉब्लम है, हम लोग साथ में मिलकर सॉल्व करेंगे। मेरे क्षेत्र में हुआ है ऐसा। अखबारों में भी पढ़ा होगा आपने कि एम. सी. डी. के मलेरिया डिपार्टमेंट के इंस्पेक्टर की इस वजह से पार्षद ने पिटाई कर दी कि मेरे कहने पर... किसी क्षेत्र में ज्यादा परेशानी हो रही थी... आप दवा वहां छिड़क दीजिए, इस बात पर पिटाई की गई। एफ.आई. आर. भी हुई है शक्करपुर थाने में। यह किस तरीके को कोआपरेटिव फैडरलिज्म है यह! क्या कोशिश की जा रही है? हर जगह पर फॉगिंग वाले को बुलाकर, अब तो सत्येंद्र जैन जी का बहुत-बहुत धन्यवाद कि फॉगिंग मशीन इन्होंने एवेलेबल करवा दी, वरना फॉगिंग मशीन वाले जो एम. सी. डी. के पास थे, वो पार्षद के यहां पर जाकर रिपोर्ट करते थे, जिस-जिस जगह पर वो बोलेंगे, वहां जाकर वो फॉगिंग नहीं करेंगे। कोई गुहार लगाता रहे, कुछ भी करता रहे, कितने मच्छर हैं, कितने नहीं...जहां पर भेजेंगे सिर्फ वहां पर जाकर करेंगे अगर उसके बिना चले गये तो कुछ भी हो सकता है इनकी नौकरी के साथ। यह कैसी इंटेंशन है! यह

क्या तरीका है? यह तो डेलिब्रेट कोशिश है किसी भी माहौल को खराब करने की... एक हेल्थ सिस्टम को पूरा का पूरा फेल करने की। एक और चीज आती है दिमाग में... एक तरफ तो बीमारी बढ़ रही है।... हॉस्पिटल्स दिल्ली के हैं, आस–पास के स्टेट्स की हालत बहुत अच्छी नहीं है, हेल्थ को लेकर तो वहां के लोग भी दिल्ली आते हैं जब बुखार होता है, बीमारी होती है और लोग पैनिक भी कर रहे होते हैं उस पैनिक को बढ़ाने के लिए जो मीडिया ने योगदान दिया है सर, वो सराहनीय है। वो ऐसा है कि जिसकी सराहना जितनी की जाये, कम है। इतना पैनिक क्रिएट करना, दो लोगों को बिठा देना, तीन लोगों को बिठा देना और फिर उनकी आपस में बहस छिड़वाना और फिर कहना कि यह तो आरोप–प्रत्यारोप हो रहे हैं। इतने लोग... ऐसा हो रहा है, इतना वैसा हो रहा है, इतना फैल गया है। सर, पैनिक सिच्युएशन में जरा सा भी बुखार होता है आदमी हॉस्पिटल भागने वाला है आज की तारीख में। चिकनगुनिया के साढ़े दस हजार बेड तकरीबन हमारी दिल्ली की सरकार के अंडर में बेड आते हैं, ढाई हजार के करीब बेड एम.सी.डी. के अंडर में आते हैं, साढ़े दस हजार के करीब बेड केंद्र सरकार के अंडर में आते हैं और ऐसे 20–22 हजार प्राइवेट हॉस्पिटल्स के अंडर में आते हैं। इतने बेड होने के बावजूद सर, चिकनगुनिया और डेंगू के केसेज इतने नहीं हैं जितने कि नॉर्मल बुखार के लोग भी जाते हैं अपनी ड्रिप चढ़वाने, यह पैनिक क्रिएट किया मीडिया ने। मीडिया ने अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभाई।

अध्यक्ष महोदय : नितिन जी, कन्क्लूड कीजिए प्लीज।

श्री नितिन त्यागी : सर, कन्क्लूड कर रहा हूं। सर, आज की तारीख में जहां पर स्थिति यह है कि पुलिस स्टेशन में, स्कूलों में, सब जगह पर

फॉगिंग हमें करवानी पड़ रही है, वहां पर एम.सी.डी. इन सब चीजों में लगा हुआ है कि विजय गोयल जी ने जो ऐतिहासिक कोठी खरीदी, उसके पैसे कैसे बचवाये जायें। जो स्प्रे और फॉगिंग आज की तारीख में पेनिक सिच्युएशन में ओवर यूज हो रही है... मुझे इतना ज्ञान नहीं है। मैं हेल्थ मिनिस्टर साहब से पूछना चाहूंगा कि जिस तरीके से इतना ज्यादा, इसका ओवर यूज हो रहा है, क्या यह हमारी फूड चैन में तो नहीं चली जाएगी, कहीं लांग टर्म में इसकी परेशानी तो नहीं हो जाएगी? सर, और एक बात पर बहुत सराहना करूंगा दिल्ली सरकार की कि जिस तरीके से चिकनगुनिया या डेंगू के आउट ब्रेक से महीनों पहले हम लोगों ने प्रिवेंटिव मेजर्स लिए कि हॉस्पिटल्स में हम लोगों ने बेड बढ़ाने की कोशिश करी, हम लोगों ने फीवर कलीनिक्स खोलने की कोशिश करी और पिछले साल 55 थे, इस बार 355 के करीब फीवर क्लीनिक्स थे, हर मोहल्ला क्लीनिक्स के अंदर इनके टेस्ट का पूरा का पूरा इंतजाम किया गया। यह बहुत सराहनीय था। अगर मिलकर कोशिश की जाये, अगले साल, देखिये, इस साल तो जो हो गया, सो हो गया, एम. सी. डी. से यह गुजारिश है कि अगर मिलकर कोशिश की जाये, पहले से बैठकर प्लानिंग की जाये, मुझे लगता है कि दिल्ली में हम लोग चिकनगुनिया, डेंगू जैसी बीमारियों पर बहुत इफेक्टिव तरीके से काबू पा पायेंगे। सर, एक और लास्ट में कहना चाहूंगा कि दिल्ली गवर्नमेंट को मैं बहुत कांग्रेच्युलेट करना चाहता हूं कि इस बार चाइनीज क्रेकर्स जो कि पॉल्युशन का बहुत बड़ा स्रोत है, चाइनीज क्रेकर्स पर बेन लगाने के लिए दीवाली से इतना पहले, पर बेन लगाया दिल्ली सरकार ने चाइनीज क्रेकर्स पर। इसके लिए बहुत-बहुत बधाई देना चाहूंगा। यह हमारे दिल्ली के पर्यावरण के लिए बहुत सराहनीय कदम है, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री ऋतुराज जी।

श्री ऋतुराज गोविंद : सबसे पहले बहुत–बहुत धन्यवाद माननीय अध्यक्ष जी कि आपने मुझे नियम 54 के तहत इतने इम्पोर्टेंट विषय पर बोलने का मौका दिया। जैसा कि अभी आपने तीन–चार लोगों से सुना कि अभी चिकनगुनिया, मलेरिया, डेंगू का जो कहर दिल्ली के अंदर इतना ज्यादा फैल चुका है।

अध्यक्ष जी, मैं अनअथोराइज्ड कालोनी में रहता हूं। मेरे क्षेत्र में कम से कम 106 कालोनीज हैं, कोई भी ऐसा घर, कोई भी ऐसी गली या कोई भी ऐसी कालोनी नहीं है, जहां पर वॉयरल फीवर न हो, चिकनगुनिया की बीमारी ने हो, डेंगू का कहर न हो। जैसा कि भावना बहन कह रही थी कि चिकनगुनिया एक ऐसी बीमारी है, जिससे कि जोड़ों में दर्द होता है, जिससे कि इतना ज्यादा दर्द होता है, लोग कराह रहे हैं दर्द से, लेकिन इसको ठीक करने की जिम्मेदारी है एम. सी. डी. दिल्ली की। दस साल से बी. जे. पी. एम. सी. डी. में है। कोई भी एजेंसी जब दस साल से, पांच साल से किसी क्षेत्र में काम करती है तो वो एक्सपर्टीज हो जाती है। उसको पता होता है कि इस सीजन के अंदर कब मच्छर का प्रकोप बढ़ेगा, कब लोगों को दिक्कतें होंगी तो उसे कैसे प्रिवेंट करना है, लेकिन यह बात मुझे समझ में नहीं आती है, शायद किसी को नहीं आती है कि बी. जे. पी. शासित एम. सी. डी. दस साल से जो कि दिल्ली के अंदर है, इनकी जिम्मेदारी है साफ–सफाई रखना, इनकी जिम्मेदारी है मच्छरों को मारना, इनकी जिम्मेदारी है इस सीजन में जब चिगनगुनिया, मलेरिया और डेंगू का प्रकोप बढ़ता है तो उसको कैसे रोका जाये। उसके लिए पहले से इंतेजाम करना, लेकिन बहुत दुख के साथ कहना पड़ता है कि अगर पिछले साल 460 लोग मरते हें डेंगू की वजह से तो इस बार चिकनगुनिया की महामारी होती है और एम. सी. डी. जो कि भ्रष्ट एम. सी.

डी. है, दिल्ली के अंदर बी. जे. पी. शासित, दस साल से चल रही है, इसका मतलब उसने दस साल से कोई सबक नहीं सीखा है और जिसका नतीजा है कि दिल्ली सरकार ने पिछले साल के मुकाबले सारे प्रिवेंटिव मेजर्स लिए। अपने हॉस्पिटल्स के अंदर बेड्स को बढ़ाया। प्राइवेट हॉस्पिटल्स के अंदर सत्येंद्र जैन जी ने उनकी ऑर्डर दिया कि 10 से 20 प्रतिशत बेड बढ़ाइये ताकि इस समय में इमरजेंसी सिच्युशन से हम लोग निजात पासकें, लेकिन एम.सी.डी. का रिलेक्टेंट एटीट्यूड इस बात को साबित करने में लगा हुआ है। ये सिर्फ आरोप और प्रत्यारोप की राजनीति से ऊपर नहीं उठ पा रहे कि दस साल से अगर आप एम.सी.डी. में हो और हर साल इस तरह की प्रॉब्लम्स क्रिएट हो रही है तो आप प्रिवेन्टिव मेजर्स पहले से क्यों नहीं लेते हो? सियासत करो और रूपया दिल्ली सरकार ने एडीशनल दिया है इस साल ताकि प्रॉपर तरीके से फॉगिंग हो सके, प्रिवेन्टिव मेजर्स लिया जा सके और दिल्ली जो कि देश की राजधानी है, उसको चिकनगुनिया, मलेरिया और डेंगू जैसी महामारी से बचाया जा सके। ये किस तरह का स्वच्छता अभियान है? राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहते थे, जब उस समय में आजादी की लड़ाई चल रही थी, पूरे देश को स्वच्छता के प्रति आकर्षित करने के लिए उन्होंने एक शब्द कहा था कि 'sanitation is more important than independence.' स्वच्छता आजादी से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि स्वच्छ समाज में, स्वच्छ आत्मा बसता है और जहां स्वच्छ आत्मा होता है, वहीं परमात्मा का वास होता है और मुझे बड़ी खुशी हुई थी जब दो साल पहले हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर को स्वच्छता अभियान को लांच किया था। इसी देश की राजधानी के अंदर तो ऐसा महसूस हुआ था कि शायद अब इस दिल्ली प्रदेश के अंदर दिल्ली क्षेत्र के अंदर शायद स्वच्छता को लेकर ये चीजें जो हैं, सुधरेंगी। चीजें बैटर

होंगी और कम से कम दिल्ली जो देश के राजधानी है, उसको तो स्वच्छ कर पायेंगे लेकिन बड़ी शर्म आती है इस बात को कहते हुए कि दिल्ली की एम. सी. डी. जिसमें नरेंद्र मोदी जी की अपनी पार्टी बैठी है, दस साल से बैठी है, उसने स्वच्छता का ऐसा कबाड़ा कर रखा है कि जब हम क्षेत्र में जनता के बीच में जाते हैं तो सिर्फ एक मुद्दा उठाते हैं लोग कि भाई साहब, साफ सफाई करवा दो, नालियां साफ करवा दो, वॉटर लागिंग ठीक करवा दो, यहां फॉगिंग नहीं होती है, ये चीजें नहीं होती हैं। लोग बिजली से खुश हैं, पानी से खुश हैं, लोगों को अच्छा पीने का पानी मिल रहा है, स्कूल बन रहे हैं। लोग बिजली से खुश हैं, पानी से खुश हैं, लोगों को अच्छा पीने का पानी मिल रहा है, स्कूल बन रहे हैं। वो सारा काम हम लोग कर रहे हैं, जो हमारी जिम्मेदारी है लेकिन बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि एम. सी. डी. अपनी जिम्मेदारियों से भाग रही है और जिसका नतीजा है कि पूरी दिल्ली के अंदर ये महामारी का प्रकोप बन रहा है। अब अगर दिल्ली सरकार पी.डब्ल्यू.डी. के जो डिपार्टमेमंट के अधिकारी हैं, उन्होंने फॉगिंग करना शुरू किया है। हमारे कार्यकर्ताओं ने गली-गली जाकर के फॉगिंग करना शुरू किया है ताकि यहां पर मच्छर का प्रकोप कम हो सके, लोगों को हम जागरूक कर सकें और इन बीमारियों का जो इफेक्ट है, इसको कम कर सकें।

साथियों, 66 करोड़ एडीशनल पैकेज देने के बावजूद भी ये हालत है। दिल्ली में हजारों की संख्या में लोग चिकनगुनिया और डेंगू से प्रभावित हैं, लेकिन हमारे यहां पर, हमारे बिहार में लोग एक शब्द कहते हैं वो तो थेथर... थेथर का मतलब होता है ढीट। कितना भी चर्चा कर लीजिए, ऐसा रिलेक्टेंट एटीट्यूट है एम.सी.डी. का लगता है कि भई, ये तो थेथर एम.सी.डी. है, ये सुनने वाले नहीं हैं। इनको चाहे 66 करोड़ एडीशनल पैकेज दे दीजिए,

चाहे कुछ दे दीजिये, मैं ये चाहता हूं अध्यक्ष महोदय कि हम लोगों ने विशेष सत्र के अंदर चिकनगुनिया और डेंगू का विषय उठाया, मुझे बड़ी खुशी हुई क्योंकि पूरी दिल्ली आज इससे प्रभावित हैं। सारी दिल्ली की जनता हमें देख रही है कि विशेष सत्र में हम किस बारे में चर्चा करते हैं। मैं आपके माधयम से एम.सी.डी. को, माननीय मोदी जी को, नेता विपक्ष को मैं सिर्फ ये ही कहना चाहता हूं कि आप लोग अगर जनता के प्रति अगर जरा सा भी अकाउंटेबल महसूस करते हैं, अगर आपको लगता है कि जनता यहां पर परेशान है तो प्लीज राजनीति को छोड़कर के आपकी जो जिम्मेदारी है, उसको निभाइये। आप फॉगिंग करवाइये, मलेरिया का छिड़काव करवाइये और जा जाकर के जैसा कि नितिन जी ने बताया कि उनको एम. सी. डी. के स्कूल से प्रिंसिपल के फोन आते हैं, ये स्थिति सिर्फ लक्ष्मी नगर की नहीं है, कमोबेश पूरे दिल्ली प्रदेश की है। इनकी जिम्मेवारी को लीजिये और इसको ठीक करिये और आने वाले समय में, अगले साल ऐसी दिक्कत न हो, इसके लिए पहले से प्रिवेन्टिव मेजर्स लेने की जरूरत है, बहुत–बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय, जैसा कि मैंने बताया कि अगले नहीं रहेंगे। मैं आपको एक चीज कह कह देता हूं कि छह महीने बाद, जैसे आज की तारीख में दिल्ली की जनता डेंगू का मच्छर दिखने पर उसका जो हश्र करती है, वही छह महीने बाद आपका होने वाला है अगर आपने ठीक तरीके से प्रिवेन्टिव मेजर्स नहीं लिये और उसका इलाज नहीं किया, मच्छरों को नहीं मारा, लोगों को नहीं बचाया तो! बहुत–बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री अनिल वाजपेयी जी, संक्षेप में रखियेगा, प्लीज।

श्री अनिल बाजपेयी : सर, मैं आपका ध्यान ई. डी. एम. सी. की ओर दिलाना चाहता हूं और ये बड़ा गहन प्रश्न है सर, जो मैं आपके सामने रखना

चाहता हूं क्योंकि आपकी विधानसभा भी मेरे ई. डी.एम.सी. के क्षेत्र में आती है। आज से कम से कम दो माह पूर्व, मैं वहां की डिप्टी कमिश्नर है अलका शर्मा जी से मिला। मेरे विधानसभा क्षेत्र में बुलंद मस्जिद एक क्षेत्र पड़ता है और जहां पर मैं समझता हूं 90 परसेंट मॉइनारिटीज की पापुलेशन है और वहां पर सफाई को लेकर एक बातचीत हुई उनसे और उन्होंने साफ तरीके से कह दिया कि ये इलाका मेरे पास नहीं आता है। इसका काम फ्लड डिपार्टमेंट करायेगा, हमने कहा कि हो सकता है फ्लड का डिपार्टमेंट कराये, जब हमने फ्लड के अधिकारियों को बुलाया, उनके चीफ इंजीनियर से विस्तार से बात की तो उन्होंने कहा कि अनाथराईज एरिये के अंदर हम लोग इस क्षेत्र की सफाई का काम नहीं कर सकते। बकरीद का भी मौका था और माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि उसके बाद जब फ्लड विभाग के अधिकारियों से बातचीत हुई तो हमने कहा कि आप मेरे पत्र का जवाब दीजिये। जब मैंने उनसे रिटन में लिया तो उन्होंने जवाब दिया कि ये सारा काम एम. सी.डी. का है। दो महीने हमारे बुलंद मस्जिद के इलाके के लोगों ने सफर किया आज। वही काम एम.सी.डी. करा रही है। मैं आपके माध्यम से पूछना चहाता हूं कि ऐसा सौतेला व्यवहार जो डीसी हैं, चाहे ई.डी.एम.सी. के हों या किसी भी क्षेत्र के हों, जब कोई अधिकारी जो इस पद पर बैठा है, तो उसके लिए सारे आदमी बराबर है। फॉगिंग की बात... मैंने फॉगिंग के लिए उनको फोन किया। कहा कि कम से कम प्लीज हमको ये बताइये कि मेरे विधान सभा क्षेत्र के कौन–कौन से क्षेत्र में फॉगिंग की जा रही है, कौन–कौन से लोग हैं? कोई जानकारी नहीं दी गई। उसके बाद मैंने कमीश्नर साहब से बात की और जब उनसे बात की, लेकिन उनको कहने के बावजूद भी आज भी वहां पर काम नहीं शुरू हुआ। मैं धन्यवाद करना चाहूंगा दिल्ली के मुख्यमंत्री

साहब का कि वो बैंगलोर से इलाज कराकर लौटे और उसके बाद उन्होंने दिल्ली के लोगों को, दिल्ली सरकार के लिये ये कहा कि अगर एम. सी. डी. के लोग इस तरीके से दिल्ली के लोगों के साथ व्यवहार कर रहे हैं तो हम दिल्ली के लोगों को बीमार नहीं रहने देंगे। जैन साहब यहां पर उपस्थित हैं। एक हमारे यहां हेडगेवार अस्पताल है, जीटीबी अस्पताल है; एक एक बेड पर तीन–तीन लोग वहां पर हैं, कई जगह हम लोगों ने व्यवस्था की, पालिक्लिनिक में भी हम लोगों ने की, लेकिन एम.सी.डी. की ओर से कोई काम नहीं किया जा रहा है वहां पर। आज भी जो फॉगिंग हम लोग करा रहे हैं, उसमें जो वहां के काउंसिलर्स हैं, वो लोगों में गलत प्रचार कराते हैं। हमने कहा देखिये, आज एम. सी. डी. ने हाथ खड़े कर दिये। आज एम. सी. डी. के लोगों के द्वारा लोगों की मदद नहीं की जा रही है तो आज कम से दिल्ली सरकार और दिल्ली सरकार के लोग उनके डिपार्टमेंट के लोग, पी. डब्ल्यू. डी. के लोग कम से कम इलाके के अंदर फॉगिंग करा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे अनुरोध है कि इस मामले में आप संज्ञान लेके कम से कम डिप्टी कमिश्नर को जरूर बुलाइये और उससे बात कीजिए कि कम से कम ये सौतेला व्यवहार नहीं होना चाहिए। पब्लिक ने वोट हमको भी दिया है, पब्लिक ने वोट बी. जे. पी. को भी दिया है, पब्लिक ने वोट कांग्रेस के लोगों को भी दिया है। एक बात मैं और कह देना चाहता हूं, माननीय मुख्यमंत्री साहब भी यहां बैठे हैं... एम.सी.डी. का बंटवारा हुआ, यही बहुत गलत था ये। हम लोग पहले आदमी थे आर.डब्ल्यू.ए. के, जिन्होंने दिल्ली के मुख्यमंत्री का खुलेआम विरोध किया और आज अगर एम.सी.डी. का बंटवारा

नहीं होता तो भी ये स्थिति नहीं आती। आज और सौतेला व्यवहार किया जा रहा है।

एक बात अध्यक्ष महोदय, मैं और कहना देना चाहता हूं कि हमारी दिल्ली सरकार ने पचास लाख रूपये हर वार्ड को काम करने के लिए दिये हैं, लेकिन न तो कमिश्नर ने पूछा है किसी विधायक से और न ही किसी ने पूछा है, वो पचास लाख रूपये जो सेंक्शन किये गये हैं, उसमें विधायक भी बता सकता है कि उसको अपने क्षेत्र में कौन सा काम कराना है, किस वार्ड में कराया गया है सिर्फ एम. सी. डी. के काउंसलर्स को संज्ञान में लेते हुए और उनसे कापी ले ली गई है। इसके अंदर अध्यक्ष महोदय, हस्तक्षेप होना चाहिए क्योंकि हम लोग चुने हुए प्रतिनिधि हैं। अगर हमारी सरकार पचास लाख रूपये दे रही है...

अध्यक्ष महोदय : बाजपेयी जी कन्क्ल्यूड करिये अब, कन्क्ल्यूड करिये, प्लीज कन्क्ल्यूड करिये।

श्री अनिल बाजपेयी : तो वो भी इस देश के अंदर खर्च हों, थैंक यू। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद

अध्यक्ष महोदय : जगदीश प्रधान जी।

श्री जगदीश प्रधान : धन्यवाद अध्यक्ष जी। अभी मलेरिया, डेंगू और चिगनगुनिया पर चर्चा हुई। मैं इसकी तारीफ भी करता हूं कि हमारे स्वास्थ्य मंत्री जी ने एक हफ्ते से फॉगिंग मशीन चालू करवाई हैं। उसके साथ-साथ मैं कहना चाहता हूं कि जो मशीनें चल रही हैं, मैं अपने क्षेत्र की बात कर रहा हूं कि एक हफ्ते के अंदर मशीनें तो आठ दिलाई हैं, बाकी एक घंटे

पूरे नहीं चल पाई हैं। कभी उनके पास सामान नहीं होता, कभी आते हैं आठ बजे और सवा आठ बजे निकल जाते हैं। तो अगर मशीनें लगाई हैं, तो चलनी चाहिए। पैसा वैस्ट ने जाए और जिस परपज के लिए उनको लगाया गया है, वो परपज हल होनी चाहिए।

दूसरा, माननीय मुख्यमंत्री जी यहां बैठे हैं, मैं राजनीति नहीं करना चाहता कि एम. सी. डी. को गाली दें, दिल्ली सरकार को गालियां दें। मैं एक बहुत ही पते की बात आपको कहना चाहता हूं कि दिल्ली खासकर के जहां अनाथराईज्ड कालोनियां हैं, मेरा करावल नगर विधानसभा है, मुस्तफाबाद विधानसभा है, गोकलपुर विधानसभा है, यहां एक ऐसी भयंकर बीमारी फैल रही है कैंसर की और वो कैंसर क्यों फैल रहा है, उसकी तरफ मैं मुख्यमंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि करावल नगर के अंदर तीन ट्रक तेजाब डेली आता है और वो जीन्स की फैक्ट्रियों में और अपना कॉपर के तार खिंचाई में और कैमिकल्स की फैक्ट्रियों में यूज होता है जिससे वो तेजाब और सारा पानी नाले में बहता है और नाले के थ्रू वो सारा पानी जमीन में जाता है और हमारे क्षेत्र ऐसे हैं, ऐसी विधानसभा हैं कि जहां पानी पीने के योग्य हमें पूरा नहीं मिल पाता है। जब बच्चे को प्यास लगेगी और उसके सामने हैंडपंप है, तो वो उस हैंड पंप का पानी पीता है और उस पानी को पीने से उसको कैंसर की बीमारी पैदा होती है। पूरे करावल नगर मुस्तफाबाद विधानसभा के अंदर पिछले एक साल में चालीस से पचास लोग कैंसर की बीमारी से मर चुके हैं, जिनकी उधे हो चुकी है तो मैं जरा ध्यान दिलाना चाहता हूं कि इस पर सख्त कार्रवाई की जाए जिस तरह की भी फैक्ट्री हैं और जैन साहब आप पावर मिनिस्टर भी हैं, मैं करावल नगर गांव की बात कर रहा हूं, मेरा गांव है। वहां पॉल्यूशन बहुत ज्यादा है। कॉपर की 40 फैक्ट्रियां

वहां हैं जो बिजली का बिल भी पे नहीं करते, टोटल चोरी होती है वहां। आप इस पर ध्यान दें। एक तो वहां से हमारी बीमारी से जान छूट जायेगी और जो बिजली की चोरी कुछ लोग करते हैं और बाकी लोगों पर उस का भार पड़ता है। दूसरा, जो गंदा पानी निकलता है तेजाब का, कैमिकल का, जैसे जमना के अंदर सब्जी उगाई जा रही है। अभी आपने पिछले हफ्ते पहले सहारनपुर से लेकर गाजियाबाद तक जी न्यूज चैनल पर काफी रिपोर्ट आई उसकी कि कैमिकल की वजह से जो सब्जियों का पॉल्यूशन है, उससे कैंसर की बीमारी हो रही है। तो इस तरह से जमुना के अंदर जो सब्जी उगाई जा रही है, मैं आपका धयान दिलाना चाहता हूं कि ये कैंसर की बीमारी का घर है। जब तक जमुना पूरी तरह साफ न हो, इस पर सब्जी उगाने पर रोक लगाई जाये ताकि ये लोग सब्जी खाने से बीमार न हों और उनकी जान बच सके। और ज्यादा ना कहते हुए इतना ही कहूंगा कि इन बातों पर गौर किया जाये। मेरे क्षेत्र में इतनी बीमारी फैल रही है साहब जी कि मैं आपसे बयान नहीं कर सकता हूं क्योंकि लोग गंदे पानी को पीते हैं। मैं इसमें पानी की कमी को नहीं कह रहा कि आबादी बढ़ती जा रही है, पानी की कमी है। बाकी जब बच्चे को प्यास लगेगी या मुझे प्यास लगेगी, सामने नल है तो मैं उस पानी को पियूंगा और उस पानी को पियूंगा तो मैं बीमार पड़ूंगा। तो मैं आपका ध्यान इस और दिलाना चाहता हूं धन्यवाद जय हिंद।

अध्यक्ष महोदय : श्री विजेन्द्र गर्ग जी।

श्री विजेन्द्र गर्ग : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे इस गंभीर मुद्दे पर बोलने का अवसर प्रदान किया।

अध्यक्ष जी, आज से दो वर्ष पूर्व दो अक्टूबर के दिन देश के माननीय

प्रधानमंत्री जी ने मंदिर मार्ग की सड़क से 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरूआत की। इस देश की और दिल्ली की जनता को उम्मीद जगी कि अब भारत के प्रधानमंत्री ने भारत को स्वच्छ करने की बागडोर संभाल ली है तो दिल्ली स्वच्छ होगी, लेकिन इन उम्मीदों पर उसव वक्त पानी फिर गया जब प्रधानमंत्री जी की पार्टी भा.ज.पा. की एम.सी.डी. में बैठी सरकार ने उन्हीं के स्वच्छ भारत मिशन की धज्जियां सरे आम उड़ा के रख दीं। बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि पिछले साढ़े नौ वर्षो से इस दिल्ली में भा.जा.पा. की एम. सी.डी. में सरकार है, लेकिन भा.ज.पा. के अहंकारी और भ्रष्टाचार पार्षदों ने मोदी जी के स्वच्छ भारत अभियान की कतई परवाह नहीं की और वो केवल और केवल भ्रष्टाचार में लिप्त रहे और इस दिल्ली की जनता के बहुमूल्य जीवन से खिलवाड़ करने में भी उन्हें तनिक भी गुरेज और परहेज नहीं हुआ। पूरी दिल्ली का भा.ज.पा. ने कूड़े के ढेर में तब्दील कर दिया। अभी भावना जी बता रही थी कि चिकनगुनिया झुकाने वाली बीमारी है, इसमें शरीर के जोड़ों में दर्द होता है, आदमी झुक जाता है। आज दिल्ली वासियों का सिर भा.ज. पा. में बैठी एम.सी.डी. ने शर्म से झुका दिया है कि दिल्ली के कूड़े ढेर में तब्दील हो गई है ये सही मायने में सर झुकाने वाली भी बीमारी एम.सी.डी. ने बना दी है।

अध्यक्ष जी, किसी भी शहर को साफ करने की जिम्मेवारी वहां की लोकल बॉडीज पर होती है स्थानीय निकायों पर होती है। दिल्ली नगर निगम में पिछले साढ़े नौ वर्षो से लगातार बीजेपी काबिज है। इस डेंगू और चिकनगुनिया का आगमन भी इन्हीं के टाईम में हुआ। मुझे ध्यान है इससे पहले मैंने कभी चिकनगुनिया और डेंगू का नाम दिल्ली में नहीं सुना था पर जब ये भा.ज.पा. सत्ता में आई निगम के अंदर तो चिकनगुनिया भी आ गया, डेंगू भी आग या। मैं तो इन भा.ज.पा. के पार्षदों को इस चिकनगुनिया और डेंगू का

जनक कहना चाहता हूं कि इन्होंने इसको जन्म दिया है डेंगू चिकनगुनिया को। एम. सी. डी. में बीजेपी ने क्या दिया डेंगू मलेरिया और चिकनगुनिया। बी. जे. पी. के पार्षदों के निकम्मेपन एवं भ्रष्टाचार के कारण दिल्ली के तमाम नाले और नालियां गंदगी से और कीचड़ से भरे पड़े हैं। इनकी कतई भी सफाई नहीं होती इनमें हर वक्त पानी भरा रहता है जिनमें मच्छर पनपते हैं जो कई बीमारियों का कारण बनते हैं। गलियों, सड़कों पर जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं। कूड़े के जो ढलाव हैं, अध्यक्ष जी, उनकी महीनों तक सफाई नहीं होती। पता नहीं, किस एजेंसी को इन्होंने ठेका दिया है। अगर एक ट्रक वो ऐजेंसी कूड़ा उठाती है तो चार ट्रक कागजों में दिखाये जाते हैं और चार ट्रकों के पैसे लिये जाते हैं और कुछ कूड़ा तो उन्हीं ढलावों पर ही जला दिया जाता है जब कि एन. जी. टी. की सख्त इन्स्ट्रक्शन है कि कूड़े को नहीं जलाया जायेगा। ये उस कूड़े का निष्पादन, उस कूड़े को उन्हीं ढलावों में जलाकर करते हैं और इस जलाने के कारण देश और दिल्ली को एक जहरीली गैस का सामना करना पड़ता है। इन ढलावों में पड़ा हुआ कूड़ा सड़ता रहता है। इस कूड़े में कई कीटाणु और विषाणु पैदा होते हैं जो नाना प्रकार की बीमारियों को जन्म देते हैं। निगम में बैठे बी. जे. पी. के पार्षद अपने अहंकारी और भ्रष्ट रवैये से दिल्ली की भोली भाली जनता के जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं। ये डेंगू और चिकनगुनिया के मच्छर से होने वाली बीमारियां हैं। पिछले साढ़े नौ वर्षो में एम. सी. डी. ने इस मच्छर के खात्मे के लिए कुछ नहीं किया। इनको पता होता है कि हर बार डेंगू और चिकनगुनिया फैलेगा, लेकिन ये उस के लिए कोई कदम नहीं उठाते हैं। अध्यक्ष जी, जब महामारी का रूप ये बीमारी धारण कर लेती है तो तब इनकी नींद खुलती है। मैं धन्यवाद करना चाहता हूं कि आदरणीय मुख्यमंत्री जी का जिन्होंने तत्काल आदेश दिये कि

दिल्ली के तमाम सरकारी अस्पतालों में फीवर क्लीनिक बना दिये जायें और बुखार के हर पेशेंट का इलाज तुरंत किया जाये। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री माननीय सत्येंद्र जैन जी यहां विराजमान हैं, पूरी पी.डब्ल्यू.डी. के कर्मचारियों को और अपनी सफाई का जिम्मा संभाला, तो पी. डब्ल्यू. डी. की टीम ने सभाला। मैं पी. डब्ल्यू. डी. के कर्मचारियों को और अपनी तमाम दिल्ली सरकार को आज दिल्ली की जनता कोटि-कोटि धन्यवाद करती है। अगर ये पी. डब्ल्यू. डी. इस बात का जिम्मा नहीं लेती, दिल्ली सरकार के अस्पताल अगर पूरी तरह से सुसज्जित नहीं होते तो ये जो महामारी है, इसमें आज आज मौतों की संख्या एक हजार के आंकड़े को भी पार कर जाती, ये मैं दावे के साथ कह सकता हूं, अगर दिल्ली सरकार समय पर इन उपायों को नहीं करती तो! जब दिल्ली सरकार ने ये ही ये काम करने हैं, एम. सी. डी. के इस सफेद हाथी को पालने का क्या फायदा? मैं तो कहता हूं कि इस एम. सी. डी. को तत्काल प्रभाव से बर्खास्त कर दिया जाना चाहिये। इन भ्रष्ट पार्षदों से तभी दिल्ली की जनता को निजात मिलेगी।

माननीय अध्यक्ष जी, कल का ये नवभारत टाइम्स का अखबार है; कैट, जिस पर इनको बहुत भरोसा है और हम भी बहुत भरोसा करते हैं उस कैट ने साफ-साफ लिखा है 'डेंगू लड़ाई में एम. सी. डी. फेल' ये कैट की रिपोर्ट है और इस पर दिल्ली सरकार ने 66 करोड़ रूपया अतिरिक्त दिया एम. सी. डी. को कि दिल्ली के अंदर महामारी को फैलने से रोको। मैं धन्यवाद करना चाहता हूं माननीय जी का जो हमेशा से एक आत्म विश्वास पैदा करते हैं और ये कहते हैं कि पैसे की दिल्ली सरकार के पास कोई कमी नहीं है, पैसा जितना चाहिए, हम देंगे लेकिन आप से इस महामारी को रोको। एम. सी. डी. ने कतई परवाह नहीं की जो 154 करोड़ रूपया और ये 66 करोड़ रूपया जो दिल्ली सरकार ने दिया, ये सारे का सारा पैसा भ्रष्टाचार हो रहा है तो

ऐसी एम. सी. डी. का क्या फायदा? इससेप हले भी हमने कई बार एम. सी. डी. की नींद खोलने की कोशिश की लेकिन वो ही बात है, भैंस के आगे बीन बजाने का कोई फायदा नहीं। चार महीने तो हमें इन्हें झेलना पड़ेगा। समय आने वाला है, दिल्ली की जनता इनको सबक सिखाने जा रही है। जिस प्रकार से ये तीन परसेंट हैं एम. सी. डी. के अंदर शायद ये तीन भी न रहें, ऐसा निर्णय दिल्ली की जनता ने किया हुआ है, लेकिन ये न तो सुधरेंगे न काम करेंगे, न काम करने देंगे। इन्हीं शब्दों के साथ अध्यक्ष जी आपने मुझे समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद, शुक्रिया, जयहिंद, जय भारत।

अध्यक्ष महोदय : श्री सौरभ भारद्वाज जी, विजेन्द्र गुप्ता जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, सैशन को बुलाने की जब घोषणा हुई तो मुझे लगा कि कोई सार्थक चर्चा सदन में होगी, लेकिन यहां तो सिर्फ आरोप प्रत्यारोप, राजनीतिक बयान और मानो ये चर्चा अगर सार्थक करनी थी तो पूरा एक महीना अभी चिकनगुनिया और डेंगी प्रकोप रहने वाला है, क्योंकि एक्सपर्टस कहते हैं कि इसका एक ही मच्छर है, एडीज जिससे ये दोनों बीमारियां होती हैं और एक्सपर्टस कहते हैं कि 16 डिग्री से कम और 30 डिग्री से अधिक अगर टेम्परेचर होगा तो ये मच्छर समाप्त होगा लेकिन ये जो पीरियड है सितंबर-अक्टूबर का, इसमें 16 डिग्री से अधिक और 30 डिग्री से कम टेम्परेचर रहता है और सोलह डिग्री से कम टेम्परेचर आने में अक्टूबर क्रॉस हो जाएगा और 30 डिग्री से नीचे टेम्परेचर आज आ गया है... आ जाएगा और ये बढ़ेगा तो इस एक महीने में हम डेंगु और चिकनगुनिया के प्रभाव को कम करने के लिए अगर यहां कोई सकारात्मक चर्चा करते, कुछ अधिकारियों को यहां बुलाते, उनसे कुछ यहां पर उनकी तैयारियों की कोई रिपोर्ट

लेते, उसमें कोई कमी है, उसके बारे में उनको आगाह करते तो मुझे लगता है कि इसका कोई सार्थक अर्थ था। अभी मेरे पास यहां पर एक सूची है पूरी क्योंकि सरकार पहले तो जागी नहीं, दिल्ली की सरकार ने समय रहते कोई कदम नहीं उठाया। पहली जो एक रिव्यू मीटिंग हुई थी, वो जनवरी, 21 को हुई थी। उसके बाद 21 बार रिव्यू मीटिंग की है सेंट्रल गर्वमेंट ने। बार-बार एडिशनल सैकेट्री लैवल पर, ज्वायंट सैकेट्री लैवल पर, सैकेट्री लैवल पर, चीफ सैकेट्री लैवल पर, मिनिस्टर लैवल पर... लेकिन मैं चाहूंगा इन रिव्यू मीटिंग्स में उसको क्रिटिकल आरोप-प्रत्यारोप में समाप्त न करें, उसका कोई कंसट्रक्टिव पक्ष यहां पर बताएं कि उसका दिल्ली को कैसे लाभ होगा? 12 एडवाइजरीज आई, पहली एडवाइजरी आई एक फरवरी को फिर चार फरवरी को फिर 18 फरवरी को फिर 19 फरवरी को फिर 27 अप्रैल को ये सब सरकार के पास हैं। ये कोई मैं अलग नहीं बता रहा हूं फिर पांच मई को, फिर छः मई को, फिर उसके बाद पांच जुलाई को, फिर 12 अगस्त को, फिर तीन सितंबर को, 14 सितंबर को, वीडिया कॉन्फेरेंस के माधयम से भी इन तमाम चीजों के बारे में बार-बार सरकार से आदान-प्रदान हुए, लेकिन मुझे ये लगता है कि यहां एक हारे हुए खिलाड़ी की तरह जो सिर्फ आरोप-प्रत्यारोप करता है,अपनी हार के कारण बताता है, ऐसी भावना से यहां चर्चा हो रही है। अब स्वास्थ्य मंत्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि चिकनगुनिया से कोई मौत नहीं होती है और यहां अभी हमारी साथी भावना गौड़ चिकनगुनिया से मरने वालों की संख्या बता रही थी कि तो अब ये सरकार को ज्यादा बेहतर पता होगा कि चिकनगुनिया से मृत्यु हो रही है कि नहीं हो रही है। अगर हो रही है तो मंत्री जी ने ऐसा क्यों कहा और अगर नहीं हो रही है तो फिर हमारी सदस्या ने कौन सी संख्या गिनवाई!

अध्यक्ष महोदय : ये तो केंद्रीय मंत्री ने भी बयान दिया था...

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, दिल्ली के अंदर फॉगिंग की बात हो रही है, अभी जैसा जगदीश जी ने बताया तो मैं जगदीश जी से कह रहा था आपके पास टूटी-फूटी कैसी मशीन तो आई, हमारे पास तो वो भी नहीं आई...(व्यवधान) यानी कि एम. सी. डी. फॉगिंग कर रही है, लेकिन सरकार जो करोड़ों रूपए खर्च कर रही हैं, वो मशीनें कहा गई? मैं भी सदस्य हूं इस सदन का, मुझे आकर आज तक किसी अधिकारी ने ये जानकारी नहीं दी कि कोई मशीन हम आपके क्षेत्र को दे रहे हैं। तो जो परिस्थितियां हैं, वो हमारे सामने हैं और मैं ये चाहूगा कि यहां पर अगर स्वास्थ्य मंत्री जी कोई सकारात्मक रिपोर्ट पेश करें नगर निगम के बारे में आरोप-प्रत्यारोप किए जा रहे हैं और मुझे लग रहा है वो भी राजनीति से प्रेरित है, सच्चाई को सामने नहीं लाया जा रहा है और एक और एक ग्याहर बनकर सरकार और नगर निगम इस काम को करें तो दिल्ली के लोगों को लाभ होगा लेकिन राजनीतिक प्रपंच, द्वेष भावना, मैं बार-बार दोहराता हूं और मुझे याद है, जब मैंने चौथे वित्त आयोग की बात की थी तो किस तरह पूरे सदन के अंदर उस पूरे मामले को दबाया गया था। आप वित्तीय रूप से नगर निगमों को कमजोर करते रहे। आपको ध्यान होगा कि स्ट्राइक हुई थी दिल्ली में, हड़ताल की थी सफाई कर्मचारियों ने और सरकार का रूख ये था कि हम पैसा रिलीज नहीं करेंगे, लेकिन जब सरकार को लगा, ये मामला उल्टा पड़ गया तो फिर वो तनख्वाह भी चली गई और उसके बाद आज तक सफाई कर्मचारियों की हड़ताल नहीं हुई क्योंकि सरकार जानती है कि वित्तीय संसाधनों को जुटाना, नगर निगमों के साथ तालमेल करके काम करना... लेकिन अभी सब कुछ चुनावों की और

बढ़ रहा है इसलिए ये सत्र भी चुनाव की भेंट चढ़ रहा है। ये चुनावी भाषणों से लोगों के इलाज नहीं होंगे। अस्पतालों में लोगों को जगह नहीं मिल रही है। अभी तक स्वास्थ्य मंत्री ये नहीं बताए पाए कि जिन अस्पतालों में मात्र ओपीडी चल रही है...(व्यवधान) लेकिन 300 बेडिड अस्पताल जिनमें एक भी बेड पेंशेंट के लिए उपलब्ध नहीं है। बेड है ही नहीं, अभी तक अस्पताल शुरू हीन हीं किए गए। क्यों सरकार अपनी जिम्मेदारी से भाग रही है, क्यों सरकार अपने कामों से पीछे हट रही है, क्यों सिर्फ आरोप लगाकर बिना किसी सकारात्मक... आप सरकार हैं, आप योजनाओं के साथ आइये। आप जानकारी दीजिये यहां पर कि मंत्रालय क्या कर रहा है? क्या ये जिम्मेदारी नहीं है सरकार की कि इस जानकारी से इस सदन को अवगत कराया जाए कि इस बीमारी से निपटने के लिए आपने क्या-क्या कदम उठाए हैं। लेकिन यहां तो चर्चा का रूख ही दूसरा है और इससे हम किसी नतीजे पर पहुंचेंगे, मुझे इसकी जरा भी आशा नहीं है और आज की इस चर्चा से मुझे घोर निराशा हुई है ये मैं अध्यक्ष जी, आपके माध्यम से सदन को बताना चाहता हूं।

....(व्यवधान)

श्री नितिन त्यागी : सर, एक शब्द नहीं कहा विजेन्द्र गुप्ता जी ने कि एम. सी. डी. ने क्या किया। एक शब्द नहीं कहा विजेन्द्र गुप्ता जी ने कि एम. सी. डी. ने क्या कदम उठाया उसमें वो सैक्सफुल हुआ, अनसैक्ससफुल हुआ, एक शब्द नहीं कहा विजेन्द्र गुप्ता जी ने।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, बैठिए अब। विजेन्द्र जी, हो बहुत हो गया। आपकी जानकारी बढ़ा दूं। परसों ईस्ट देहली में सफाई कर्मचारियों ने हड़ताल की है। माननीय स्वास्थ्य मंत्री श्री सत्येन्द्र जैन जी।

स्वास्थ्य मंत्री (श्री सत्येन्द्र जैन) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो नेता, प्रतिपक्ष ने जो कहा तैयारी के बारे में, मैं आपको बताना चाहूंगा 28 मार्च, 4 अप्रैल, 7 अप्रैल, 16 मई, 18 जून और 31 अगस्त उसके बाद सितंबर में दो बारी मैंने खुद या चीफ सैकेट्री की अध्यक्षता में सारे कॉरपोरेशनस के कमिश्नर्स को बुलाकर उनसे मीटिंग की और सारे ऑफिसर्स को बुलाकर उनको समझाया गया, बार–बार समझाया गया। इंटरसैक्टोरियल मीटिंग, जो सारे एम. सी. डीज के साथ होती है, जो हमारे सैकेट्री हैल्थ से, 1 जून, 23 जून और 25 जून को हुई जिसमें बहुत डिटेल में सारी बातें हुई, इनके सारे मिनटस भी है, सबके हमारे पास पूरे रिकार्डस भी हैं और जहां तक काम जो किए गए... 31 अगस्त तक जो काम किए गए, उन सबकी मैं पूरी फाइल लेकर आया हूं, सारे काम हमने जो कर रखे थे। पूरी तैयारी की हुई थी और मार्च से भी पहले हमने तैयारी स्टार्ट कर दी थी इस बारी क्योंकि पिछली बारी भी डेंगू का काफी प्रकोप रहा था तो पूरी तैयारियां काफी एडवांस में कर ली गई थी और उसका असर ये हुआ कि... दो हिस्से होते हैं–इसमें एक तो रोकथाम, पब्लिक हैल्थ, पब्लिक हैल्थ का जो पूरा का पूरा काम है, वो नगर निगम के हाथ में है। हमारा कानून ये कहता है कि मच्छरों को ब्रीडिंग को रोकना, मच्छरों को मारना, सफाई करना, ढलाव की सफाई करना, ये सारे काम एम. सी. डी. के अंडर आते हैं। जब इलाज की बात आती है देट इज सेकेंड पार्ट... अगर कोई बीमार हो ही जाता है तो इलाज कैसे किया जाए, उसके अंदर दिल्ली सरकार का काम होता है जिसमें दिल्ली में लगभग 50,000 बेड

हैं, सरकार के लगभग 25,000 बेड हैं, 25,000 में से 10,000 बेड दिल्ली सरकार के पास हैं, 1 0,500 बेड के करीब केंद्र सरकार के पास है, 3,000-3,500 एम. सी. डी. के पास है बाकी इ. एस. आई. वगैरह मिलाकर हैं तो 10,000 बेड हमारे पास हैं। अभी कुछ सदस्यों ने कहा कि बेड नहीं मिल रहे हैं। देखिए इस बारी हमने एन्श्योर किया कि बेडस की दिक्कत किसी कोनहीं होनी चाहिए सरकारी अस्पताल में। देखिए, प्राइवेट अस्पतालों को हमने आदेश दिए थे कि सभी अस्पताल जिनके पास 25,000 बेड हैं, किसी के पास 100 बेड हैं, किसी के पास 50 बेड हैं, किसी के पास 200 हैं, किसी के पास 500 हैं। हमने टेम्परेरली उनको 4-5 महीने के लिए 10 परसेंट से 20 परसेंट तक बढ़ाने की इजाजत बेड, उसी दिन एवेलेबल हो गए। सर, इस पर एक शर्त भी लगाई थी कि जो उनका मिनिमम रेट होगा, जो भी वार्ड का जो मिनिमम रेट होता है अस्पताल का, उससे भी आधा रेट ले सकते हो आप। क्योंकि जो एडिशनल बेड हैं, उसके लिए आपको बिल्डिंग नहीं बनानी, उसके लिए आपको कोई खर्चा नहीं करना है और क्योंकि एक महामारी की तरह से आने के चांस थे, ये आदेश हम बहुत पहले ही दे चुके थे और सभी अस्पतालों में हमने उनसे बार-बार बात भी की, काफी अस्पतालों ने उनके लिए एक्स्ट्रा बेड का इंतजाम भी किया। अपोलो हॉस्पीटल जिसके अंदर दिल्ली सरकार के इडब्ल्यूएस कैटगिरी में 239 बेड हैं, तो उसमें से हमने कहा था कि लगभग डेढ़ सौ बेड सिर्फ फीवर के लए और फीवर से रिलेटिड बीमारियों के लिए रिजर्व किए जाएं और किसी भी मरीज को जो फीवर का आता है, उसको एडमिट करने से मना ना किया जाए। वो हमने कर दिया था। हमारे दिल्ली सरकार के सभी अस्पतालों को आदेश दिए गए थे कि जो भी पेशेंट आता है, अगर उसे फीवर है देखो, ये तो बाद में टैस्ट के बाद पता लगता

है कि उसको चिकनगुनिया है कि डेंगी है। सबको आदेश थे कि किसी को भी, अगर उसकी तबीयत खराब है, एडमिशन की आवश्यकता है तो बिल्कुल मना ना किया जाए और मुझे बड़ी खुशी है ये कहते हुए कि दिल्ली सरकार के किसी भी अस्पताल में, किसी भी मरीज को जिसको आवश्यकता थी, एक को भी एडमिशन से मना नहीं कया गया। ऐसा जरूर है कि कुछ जगह पर जैसा कि हमारे माननीय सदस्य ने कहा कभी-कभी एक बेड पर दो पशेंट भी हो जाते हैं, सिस्टम ये है कि जब पशेंट आता है, सबसे पहले उसको इमरजेंसी में देखा जाता है, आब्जरवेशन बेड जैसे होते हैं तो ओब्जर्वेशन बेड में कभी-कभी ऐसा होता है कि आठ ही बेड है तो पशेंट को वार्ड में ले जाने की बजाए उस टाईम ओब्जर्वेशन के लिए दो घंटे देखना है, चार घंटे के लिए देखना है तो उसको बेड पर लिटा लेते हैं और हमने कह भी रखा है कि मना नहीं करना। तो ओब्जर्वेशन के बाद दो घंटे या तीन घंटे जब भी वार्ड में शिफ्ट करते हैं या ठीक लगता है तो घर भेज देते हैं तो मुझे लगता है कि अभी-भी आज के दिन भी मुझे कहते हुए खुशी है कि दिल्ली सरकार के कम से कम एक हजार बेड हमारे पास अवेलेबल हैं जिसमें कुछ अस्पतालों के नाम दे सकता हूं; एलएनजेपी में लगभग 150-200 बेड हैं।, दीपचंद बंधु अस्पताल में इस समय हमारे पास 150 बेड इस टाईम हमारे पास अवेलेबल है, राजीव गांधी सुपरस्पेशलिटी में अलग से बेड हमने किए हुए हैं, जी. टी. बी. में तो अभी-भी बेडस की दिक्कत नहीं है। मैं खुद जे पी नड्डा साहब के पास गया था और मुझे इस बात का खुशी है कि उन्होंने जाते ही मेरी बात मान ली थी। मैंने कहा था कि देखिए, दिल्ली में 10 हजार बेड आपके पास हैं, जैसे ये महामारी फैल रही है और दिल्ली के अंदर पूरे देश के लोग इलाज कराने आते हैं तो कम से कम आप 10 परसैंट बेड इसके

लिए रिजर्व कर दीजिएगा और उसके लिए वो मान गए थे कि मैं जितने भी अस्पताल हैं, उनमें मैं कोशिश करता हूं कि 10 परसैंट बेड हम अवेलेबल करा देते हैं। जहां तक अभी तक बेडस की बात है, सिस्टम में कोई दिक्कत नहीं है और बात ये होती है कि अगर सरकार ने अस्पतालों में इतने इंतजाम किए... हमने पिछली बारी 55 फीवर क्लीनिक बनाए थे, इस साल हमने 355 फीवर क्लीनिक बनाए और सारे फीवर क्लीनिक संडे को भी खुलते हैं, हर रोज खुलते हैं सारे फीवर क्लीनिक। सबमें दवाई दी जाती है, टैस्ट होते हैं, सब इंतजाम किए जाते हैं, जब रैफरल किया जाता है, तो अस्पताल में रैफर भी किया जाता है, जितने भी हमारे दिल्ली सरकार के अस्पताल हैं, सभी के अंदर फीवर क्लीनिक 24 घंटे चलने के लिए अलग से बनाए गए। ऐसा नहीं है कि वो 4 घंटे या 6 घंटे चलें। 24 घंटे चलते हैं तो ये पूरा इंतजाम किया गया था। हमने इस बारी यहां तक भी किया कि अस्पताल के अंदर अगर मरीज आता है तो उसको ओ. आर. एस. का पानी भी और घोल भी वहीं पर पिलाया जाए। कई बार क्या होता है कि डिहाईड्रेशन की वजह से तबीयत खराब होती है। तो ये पहली बारी ऐसा हुआ कि उसको लाईन में बैठे हुए हैं तो उसको वहां पर ओआरएस का घोल पिलाया गया। वहां पर पहली बारी हमने सारा इंतजाम किया। दिल्ली सरकार ने इलाज के तो इंतजाम किए, पर प्रश्न ये उठता है कि ये ऐसी बीमारी है, जिसको रोका भी जा सकता है। कुछ बीमारियां हैं जिन्हें रोका नहीं जा सकता, इस बीमारी की फर्स्ट स्टेज है कि बीमारी न होनी दी जाए। वो कहते हैं कि ना कि बचाव में ही इलाज है, 'प्रिवेंशन इज बैटर दैन क्योर' तो प्रिवेंशन क्या कि मच्छर पैदा ना होने दिया जाए। दोनों बीमारियां चिकनगुनिया, डेंगी और तीसरा मलेरिया तीनों के तीनों मच्छर की वजह से होते हैं। चिकनगुनिया और डेंगी, दोनों एडिज मच्छर से

होते हैं। वो मच्छर साफ पानी में होता है परंतु ये न समझें कि गंदगी से कोई फर्क नहीं पड़ता। मलेरिया के मच्छर गंदे पानी में होते हैं। तो यानि कुछ भी होगा जहां पर मच्छर पैदा होगा तो इन तीनों बीमारियों का कारण वो मच्छर ही है। आज से एक-दो महीने पहले जब गंदगी के ऊपर हमारा विशेष सत्र बुलाया गया था, उस टाईम मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ था कि हमारे कुछ विध ायकों ने ये मुद्दा उठाया था और उन्होंने कहा था कि जान बूझकर, जिस बात को मैं जान बूझकर कह रहा हूं, जानबूझकर गंदगी को फैलाया जा रहा है, सफाई नहीं की जा रही है और कुछ विधायकों ने तो यहां तक भी कहा था कि दिल्ली के अंदर, ऐसा लगता है कि ये बीमारी फैलाना चाहते हैं। तब मैंने भी रिक्वैस्ट की थी कि अगर मच्छर फैलेंगे, बीमारी फैलेगी तो वो सबको काटेंगे। ये नहीं कि वो कांग्रेस वालों को नहीं काटेंगे, बीजेपी वालों को नहीं काटेंगे और सिर्फ आम आदमी पार्टी वालों को काटेंगे। तो मुझे लगता है कि इस तरह का काम नहीं करना चाहिए और मुझे विश्वास भी नहीं था कि ऐसा कोई कर सकता है। परंतु अब जा के ऐसा लग रहा है कि वो बात सही थी। एम.सी.डी. का काम है, सबसे मेजर काम किसी भी कॉर्पोरेशन का प्राईमरी काम जो होता है, वो होता है सफाई का काम और लोगों को इस तरह की छोटी-मोटी बीमारी से बचाना और उस काम के अंदर वो बुरी तरह फेल हुए। उन्होंने सफाई नहीं की। हमने बार-बार कोशिश की, मुख्यमंत्री जी ने एक बारी एम.सी.डी. से मिलके अभियान भी चलाया था, हमने हजारों ट्रक, कूड़ा उठाया, पर उन्होंने सहयोग नहीं दिया। उसको 15-20 दिन चलाया, उसके बाद हम चला नहीं पाए क्योंकि उन्होंने इसमें सहयोग देना बंद कर दिया। मुझे समझ नहीं आता कि जिस पार्टी के प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत नाम से

अभियान चलाया, उसको उन्होंने इतना शर्मसार किया, इतना शर्मिंदा किया कि पूरे देश के अंदर सबसे नीचे दिल्ली का नंबर आता है गंदगी में। मतलब गंदगी में नंबर वन है और सफाई में सबसे नीचे है! तो बड़ी शर्म की बात है कि वो लोग ये कहते हैं कि कोई कुछ भी कह ले पर हम सफाई नहीं करेंगे। क्यों नहीं करेंगे उसका भी कोई कारण होगा, उसका जो कारण मुझे लगता है नितिन जी ने जैसे बताया था, उनका ज्यादा ध्यान सफाई पर नहीं, जेब की सफाई पर ज्यादा ध्यान है। कॉर्पोरेशन के लोग सिर्फ जेब की सफाई में लगे हुए हैं। उनको सफाई करनी चाहिए। गलियों में जायें, देखें, सफाई हो रही है कि नहीं हो रही है। उसको नहीं देखते, देखते हैं गली के अंदर कोई घर तो नहीं बन रहा, जो बन रहा है उससे लाओ जी, ''एक लाख रूपये।'' एक-एक लैण्टर के, दो लाख रूपये एक लैंटर के इकट्ठे करते रहते हैं और कुछ नहीं करते। अभी एलजी साहब के साथ एक मीटिंग हुई थी, एलजी साहब ने कहा कि ढलाव जो हैं, इन ढलाव के अंदर से कूड़ा उठाओ। तो वहां पर कमिश्नर साहब कहते हैं सर जी, दिन में एक बारी उठाते हैं। मैंने कहा कि जी दिन में एक बारी उठा लें तो फिर दिल्ली साफ ही हो जाए। मेरी जानकारी तो ये कहती है कि एक हफ्ते में दो या एक बारी उठाते हैं। एलजी साहब ने कहा कि आप दो बारी उठा लोगे तो उन्होंने कहा कि हां जी, उठा लेंगे। कोई दिक्कत नहीं है परंतु कहते हुए दुख होता है, माननीय सदस्य बैठे हैं, किसी भी एरिया में अगर दिन में दो बारी ढलाव साफ होते हों तो मुझे बता सकते हैं, मैंने नहीं देखा। इतनी गंदगी है मतलब ऐसा लगता है कि ढलाव बनाए गए थे कूड़ा हटाने के लिए, उन ढलाव को कूड़ा इकट्ठा करने के लिए गंदगी फैलाने के लिए कर दिया गया है। मतलब ऐसा माहौल बना दिया गया है कि सारी दिल्ली के अंदर, दिल्ली तो ऐसा लगता है सबसे गंदा शहर

है देश के अंदर। आप यहीं पर चले जाइये। विधान सभा के पास के ढलाव देख लीजिएगा बिल्कुल 100 मीटर, 200 मीटर से ऊपर देख लीजिएगा पूरा कूड़ा बाहर फैला हुआ होता है। मैंने एक बारी उनसे कहा कि ये क्यों नहीं उठाया आपने? जो कूड़ा इकट्ठा करते हैं वो ढलाव के अंदर कर लें, ढलाव के बाहर क्यों करते हैं? उन्होंने कहा कि ढलाव के बाहर इसलिए करते हैं ताकि इसमें कुछ बन सके। बड़ी अजीब सी बात है कि सड़क के ऊपर कूड़ा इसलिए डाला जाता है कि उसके अंदर वे छटनी कर सकें। ये तो कोई लॉजिक नहीं हुआ और ये एम. सी. डी. वाले, वो कूड़ा उठाने का पैसा देते हैं। मैंने सुना है कि लगभग 1800 रूपये टन... मतलब अगर एक 10 टन का ट्रक लेके जाएं, 18 हजार रूपये एक ट्रक को देते हैं। कूड़ा उठाके ले जाने के लिए। मतलब इनके पैसों का रेट तो दुनिया में सबसे ज्यादा....और मैं जानना चाहता हूं.....विजेन्द्र जी को तो वैसे काफी नॉलेज है, मुस्करा भी रहे हैं। इनको सब कुछ पता है सर किसी भी दिन आप वो पूरी रिपोर्ट ले आइयेगा, टैंडर ले आइयेगा, बता दीजिएगा। इन्होंने क्या-क्या घोटाले किए हैं इसके अंदर। इसके अंदर क्या कर रहे हैं कि इन्होंने क्या-क्या घोटाले किए हैं इसके अंदर। इसके अंदर क्या कर रहे हैं कि इन्होंने ऐसा बना रखा है कि सफाई नहीं करेंगे और ये चाहते हैं कि दिल्ली के अंदर मच्छरों का आतंक रहे और सबसे बड़ा कारण क्या है कि इनको एक चीज लगती है, बार-बार कि एम. सी. डी. जो भी गलत काम करेगी, जनता ये कहती है कि जी, हमने वोट केजरीवाल को दिया था, हमें नहीं पता कि अगर कोई भी कुछ होता है, सफाई नहीं हुई, एमएलए को पकड़ लेते हैं आप कराओ जी। वो कहते हें कि सर, ये एम.सी.डी. का काम है, कहते हैं। हमें नहीं पता और आजकल के काउंसलर यही कहते हैं कि आपने तो एम.एल.ए. को वोट दिया था, जाओ उसी के

पास, वही सफाई करा लेगा। तो मुझे समझ नहीं आया भई, जिसका काम है... या तो मेरे को कह दो कि मैं इनका ट्रांसफर कर सकता हूं कि जी, नहीं कर सकते, मैं इनको सस्पैंड कर सकता हूं कि नहीं कर सकते। कुछ तो कर सकते हैं। नहीं, तब तो हम इंडिपेंडेंट है। काम करना है तो चलो यार, स्वास्थय मंत्री के पास चले जाओ भइया... यही वर्ड यूज करते हैं, जाओ जी, केजरीवाल साहब के पास चले जाओ, उनको वोट दिया था। तो इस तरह की राजनीति करना, मुझे लगता है, बिल्कुल ठीक नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, अभी हमारे मुख्यमंत्री जी जब बैंगलोर से वापस आये, उन्होंने मुझे उसी दिन घर पर बुलाया। तबीयत उनकी ठीक नहीं थी, तब भी बुलाया उन्होंने। वे इस बात पर काफी चिंतित थे और थोड़ा नाराज भी थे। उन्होंने कहा कि भई ये मच्छर इतने ज्यादा क्यों हैं? वो सारा का सारा काम एम. सी. डी. का है। उन्होंने कहा कि अगर एम. सी. डी. नहीं कर रही तो क्या करें? उन्होंने उस दिन आदेश दिया कि फॉगिंग का काम आप करिएगा। जैसा कि मुझे आदेश मिला हमने दो दिन के बाद से फॉगिंग स्टार्ट करा दी। अब मुझे समझ नहीं आ रहा कि एम. सी. डी. के पास, मुझे बताया गया कि लगभग 1200 तो मशीनें हैं। अब मुझे समझ नहीं आ रहा कि एम. सी. डी. के पास कई हजार कर्मचारी हैं, ये फॉगिंग नहीं करवा पा रहे थे और अचानक जब हमने वो थोड़े से लोग लगाए, हमने तो हजारों लोग नहीं लगाए तो पूरी दिल्ली के अंदर फॉगिंग स्टार्ट हो गई। इसका मतलब, अगर विल है तो काम हो सकता था तो इन्होंने फॉगिंग पहले की ही नहीं और आज मैं आपको बताना चाहूंगा दिल्ली के अंदर नॉर्मली हमारे पास एक लाख ओ. पी. डी. हम करते हैं रोज। पहले किया करते थे जिसमें सारे हमारे डिस्पैंसरीज और सारे हॉस्पिटल आते हैं। 15 दिन पहले हमारे पास जो रिकॉर्ड था, एक लाख

नहीं, वो दो लाख के आसपास था, हम ओपीडी में लगभग दो लाख लोगों को देख रहे थे जिसमें सभी हमारे अस्पताल थे, मोहल्ला क्लीनिक थे, पोली क्लीनिकस थे। उन सबमें मिला के लगभग दो लाख मरीजों को हम रोज देख रहे थे कि और सबसे बड़ा कारण, मैंने कई मरीजों से बात की, मैं मदन मोहन मालवीय होस्पिटल में गया, मैंने कहा, ''पास में सफदरजंग, ऐम्स भी है, आप वहां पर क्यों नहीं जाते?'' कहते हैं, ''सर, यहां पर सारी दवाइयां मुफ्त मिलती हैं। सारे टैस्ट मुफ्त होते हैं यहां पर हमें कोई दिक्कत नहीं है।'' इसलिए ज्यादा आ रहे हैं, हमने सभी को आदेश दिए थे किसी भी पशेंट को कहीं से भी आए, मना नहीं करेंगे।

मैं नड्डा साहब के पास गया था। उन्होंने, उसको भी तोड़ा मरोड़ा था। कुछ बयान मैंने पढ़े थे। मैं सिर्फ ये रिक्वेस्ट करने गया था कि दिल्ली के अंदर जो पेशेंट्स आ रहे हैं, बाहर से आ रहे हैं। ऐसे भी पेशेंट थे... मैं एलबीएस हॉस्पिटल में गया। किसी से पूछा कि भाई, कहां रहते हो तो 50-60 किलोमीटर दूर से आये थे और दिल्ली में आए, हमारे यहां फीवर क्लीनिक में दिखाया। डॉ. ने दवाई दे दी और हम वापस चले गए। सिर्फ एक दवाई लेने के लिए उनको 50 किलोमीटर दूर आना पड़ रहा है आने का टाईम जाने का टाईम खर्चा!। तो मैंने उनसे रिक्वेस्ट की कि भाई दिल्ली सरकार ने जैसे फीवर के लिए क्लीनिक खोले हैं तो पास के जो एन. सी. आर. के अंदर हैं, उनसे भी कह दो। अच्छा कॉन्सेप्ट है आप भी थोड़े दिनों के लिए यहां 24 घंटे के लिए फीवर क्लीनिक या 12 घंटे 8 घंटे के लिए चला सकते हैं। कुछ तो लोगों को बेनिफिट होगा। हमें कोई आपत्ति नहीं है। मैं ये सदन के सामने कहना चाहता हूं कि हमने बिल्कुल ये नहीं कहा कि ये कोई बाहर से पेशेंट आयेगा। मुख्यमंत्री जी के स्पष्ट ओदश थे कि वो पूरे देश से कोई भी आए,

कहीं से आए, किसी से ये न पूछा जाए कि कहां से आये हो। सब को एडमिट किया जाए, सबको इलाज किया जाए। हमने एक भी पेशेंट को मना नहीं किया इलाज कराने से, न किया था, न करेंगे। आज भी इंतजामात हमने पूरे किए हैं परंतु फिर भी अभी एक महीना रहेगा। पूरे अक्टूबर में लगता है कि इसको खत्म होने में एक महीना तो लगेगा। तब तक के लिए हम फॉगिंग भी रखेंगे और अपनी तरफ से अस्पतालों का पूरा इंतजाम हमने किया हुआ है अस्पतालों में जो इंतजाम हैं। जिस भी तरह के हैं, अब पिछले चार पांच दिन से पेशेंट्स की संख्या थोड़ी कम होना स्टार्ट हुई है। लगभग 15-20 परसैंट कम आए हैं, यहां पर पेशेंट कम हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय, एक बात मैं सदन के सामने बड़े दुख के साथ कहना चाहूंगा दिल्ली के अंदर जो हमारे मोहल्ला क्लीीनिक्स हैं, लगभग 106 मोहल्ला क्लीनिक हमारे चल रहे हैं और दस लाख से ज्यादा मरीजों को देख चुके हैं। एम. सी. डी. के लोग, अब उनको समझ में आ रहा है। पता नहीं, क्या समझ में आ रहा है! कहते हैं कि जी, इन मोहल्ला क्लीनिक्स को हम तोड़ेंगे। उन्होंने नक्शे भी पास कराये हैं। हमें बार-बार धमकियां दे रहे हैं, नोटिस भेज रहे हैं हमें और उनसे पूछा भई, आज से पहले तुम्हें ये नोटिस और धमकियां क्यों याद नहीं आई और मोहल्ला क्लीनिक में ही क्यों याद आ रही है? कहते हैं जी, मोहल्ला क्लीनिक नहीं बनने देंगे। उन्होंने मुझे नोटिस भेजे। पहले उसका मैंने जवाब दे दिया कि जी, हम बना रहे हैं, कि सिर्फ पीडब्ल्यू की रोड से है जिसके लिए नोटिस भेजा था। कहते हैं पी. डब्ल्यू. डी. के राईट ऑफ में भी नहीं बना सकते आप। सर, राईट ऑफ वे के अंदर बस स्टॉप भी बनते हैं जो पब्लिक कन्वीनेन्स होती है सारी, सारी पब्लिक कन्वीनेन्स बनाई जाती है, टॉयलेट बनाए जाते हैं, पुलिस बूथ बनाये जाते हैं, हाईवे के लिए ये मेंडेट

है, नेशनल हाईवे का मेंडेट भी है कि अगर मेडिकल फैसिलिटीज है, तो वहीं पर बनाई जाती है और हमें कितनी जगह चाहिए होती है, 10 फीट बाई 40-50 फीट का थोड़ा लंबा सा टुकड़ा चाहिए होता है। हमारा बस स्टॉप भी 10 फीट चौड़ा होता है और प्लेन करके प्रापरली बनाए जा रहे हैं। अब उन्होंने क्या किया कि एल. जी. साहब के पास फाईल भेज दी। अब एल. जी. साहब के पास गुहार लगा रहे हैं बार-बार, धमकियां देते हैं। कभी कहते हैं कि कल तोड़ देंगे, कभी कहते हैं, आज तोड़ देंगे और हमारा लोग जो काम कर रहे हैं, उनके फाउंडेशन लेवल पर जा के रोकना चालू कर देते हैं। एक तरह से तो हमारे सामने बैठा करते थे पिछली बारी आप ही की बराबर वाली विधान सभा में।

अध्यक्ष महोदय : मेरी भी रोक दी।

स्वास्थ्य मंत्री : पर वहां पर जा के उन्होंने हंगामा कर दिया कि मोहल्ला क्लीनिक कैसा बनेगा? अब उनसे पूछो कि ये मोहल्ला क्लीनिक जो हैं ये टम्परेरी स्ट्रक्चर है। प्योरली टम्परेरी है। हमने ट्रेड फेयर में पिछले साल बनाया था। वो मनीष जी की विधान सभा में शिफ्ट कर दिया हमने। ट्रेड फेयर खत्म हुआ, उसको उठा के हम वहां ले गए। अगर कोई भी मोहल्ला क्लीनिक हमें लगता है कि इसको शिफ्ट करना है, वहां पे शिफ्ट कर देंगे। आज जहां पे झुग्गियां बन गई। झुग्गियों के साथ बना दिया तो झुग्गियां शिफ्ट होंगी उनको भी शिफ्ट कर लेंगे। तो मुझे ऐसा लगता है कि मोहल्ला क्लीनिक के ऊपर किसी भी तरह की राजनीति न की जाए। ये पहली बार दिल्ली जनता को एक ऐसी सुविधा मिल रही है और कम से कम हमें करनी भी है तो जनता से पूछकर

कर लो कि हां जी, होना चाहिए या नहीं होना चाहिए। जब ये बातें आई न तोड़ने की, मैं दो तीन मोहल्ला क्लीनिक में गया। संजीव जी बैठे होंगे, संजीव जी के साथ भी गया था। वहां पर एक अम्मा थी। उनसे पूछा मैंने, ''अम्मा, ये जो मोहल्ला क्लीनिक बन रहे हैं, ये ठीक हैं? कहती हैं, ''हां बेटा, बहुत अच्छा है।' मैंने कहा कि कुछ लोग कह रहे हैं कि इनको बंद कर दिया जाए तो उसने ये कहा, कहती है, बेटा चप्पलों से मारूंगी इनको। आ तो जाए एक बारी। यहां पे आ जाएं तो चप्पलों से मारूंगी। अरे! क्यों ऐसा क्या हुआ? कहते हैं, ''पहले दवाई लेने के लिए कौन जाए अस्पताल में। अब तो मेरे घर के सामने है और डॉ. के साथ उनका रिलेशन ऐसा है कि हर हफ्ते दिखाने जाती है। वो अम्मा जी थी, कह रही थी कि बेटा मैं तो हर हफ्ते आती हूं, दवाई भी ले जाती हूं। अपनी जो भी बीमारी होती है, दिखा लेती हूं। तो मोहल्ला क्लीनिक कान्सेप्ट को मुझे लगता है कि इनको तो बल्कि खुश हो के एम. सी. डी. की तरफ से ये कहना चाहिए कि आप एक हजार बना रहे हो, पांच सौ की जगह हम देते हैं, इन के पास बहुत सारी बिल्डिंगें खाली पड़ी हैं, जिन बिल्डिंगों के अंदर इन्होंने बस बिल्डिंग खड़ी कर दी और अपना कमीशन खा के घर बैठ गए। दस दस साल से बिल्डिंगें खाली पड़ी हैं। उनको कहना है जी, हम मोहल्ला क्लीनिक बनाने के लिए दे रहे हैं। इनको दे देना चाहिए और जहां तक ये मोहल्ला क्लीनिक के ऊपर राजनीति नहीं करनी चाहिए। अब दिल्ली के अंदर जो भी चिकनगुनिया का, डेंगी का जितना भी प्रकोप चल रहा है, इसके दिल्ली सरकार का सहयोग इनको करना चाहिए। राजनीति मुझे लगता है जब इलेक्शन आयेंगे, तब कर लें। तब उस टाईम तक ये राजनीति करने लायक बचेंगे नहीं, मुझे ऐसा लगता है और जो मेरे कुछ साथी कह रहे थे कि अभी से सहयोग, सहयोग की जरूरत नहीं पड़ेगी, जनता

ने मन बना लिया है कि इनको पिछली बारी तीन दी थी, अबकी बारी तीन भी नहीं होने देंगे, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : अल्पकालिक चर्चा नियम 55 के अंतर्गत श्री राजेश गुप्ता जी... एक मिनट मुख्यमंत्री जी कुछ कहना चाह रहे हैं।

मुख्यमंत्री का वक्तव्य

मुख्यमंत्री : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, जैसे अभी स्वास्थ्य मंत्री जी ने भी कहा कि दिल्ली सरकार पिछले एक-डेढ़ साल से बहुत अच्छा काम कर रही है, सबसे ईमानदारी से काम कर रही है और दिल्ली सरकार के कामों की चर्चा केवल देश में नहीं, विदेशों में हो रही है। लेकिन हम लोग देख रहे हैं कि किस तरह से कामों में रोज तरह-तरह की बाधाएं पहुंचाई जा रही है, टांग अड़ाई जा रही है। हमारी अकेली सरकार है... उनके यहां पता चलता है कि येदुरप्पा ने पैसे ले लिए तो उसको वाईस प्रेजिडेंट बना देते हैं, अपनी पार्टी का, हमारे यहां पता चलता है कि किसी ने गड़बड़ की तो तुरंत उसको केबिनेट से हम बाहर कर देते हैं। अकेली पार्टी है, शायद आजादी के बाद जिसने ठोस कदम उठाए हैं, गलत कामों के खिलाफ। लेकिन झूठे-झूठे केस जब लगाए जाते हैं तो उसका हम कतई समर्थन नहीं कर सकते। आज हमारे पता नहीं 13 या 14 एमएलए... उनको उठा उठा के झूठे केसेज में अंदर कर दिया। 16 एमएलएज के खिलाफ झूठे केसेज लगा के एफआईआर कर दिया। आज अमानत बता रहे हैं... अमानत के ऊपर एक ओर एफआईआर होने वाली है। मेरे ऊपर एफआईआर कर दी और फिर कह रहे हैं कि गलती से हो गई, टाइपिंग ऐरर है। टाइपिंग ऐरर होती है, मुख्यमंत्री का नाम एफआईआर में आ जाए! टाइपिंग ऐरर से आता है? तो साजिश है ये। इसका मतलब

प्रधानमंत्री... मुकेश मीणा कह रहे हैं मुझे तो पता नहीं था। इसका मतलब प्रधानमंत्री दफ्तर से बन के आई थी। लेकिन आज मैं ये कहना चाहता हूं कि ये बहुत बड़े षड्यंत्र के तहत हो रहा है जिसको आज हम इस विधान सभा के सामने रखना चाहते थे, लेकिन चूंकि सरहद के ऊपर तनाव है। आज सारे देश का फर्ज ये बनता है कि हम केंद्र सरकार के साथ खड़े हों और ऐसे में जो भी अपने केंद्र सरकार और अपनी सरकार के बीच के मुद्दे हैं, ये बाद में सुल्टा लेंगे। मेरा इस सदन से निवेदन है कि इस चर्चा को आज न करके आगे पोस्टपोन कर दिया जाए।

अध्यक्ष महोदय : मैं माननीय मुख्यमंत्री के अनुरोध तथा सदन के सदस्यों की भावनाओं के मद्दे नजर आज सूचीबद्ध अल्पकालिक चर्चा को अगले सत्र तक के लिए स्थगित करता हूं। 2 अक्टूबर को गांधी जयंती है। मेरी सभी माननीय सदस्यों से प्रार्थना है कि सुबह 10:30 बजे हम विधान सभा में पहुंचें गांधी जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में अपने श्रद्धासुमन हम अर्पित करेंगे। माननीय मुख्यमंत्री जी उपस्थित रहेंगे। विशेष रूप से लेटर भी भेजे हैं। मैं आग्रह भी कर रहा हूं इसको एक बार जरूर अंडरलाईन करें।

इससे पहले कि मैं सदन को अनिश्चित काली काल तक के लिए स्थगित करूं... कपिल जी कुछ कहना चाह रहे हैं।

पर्यटन मंत्री (श्री कपिल मिश्रा) : अध्यक्ष महोदय, 2 अक्टूबर को लालबहादुर शास्त्री जी की भी जयंती है और इस बार विजय घाट पर जो कार्यक्रम है, इस बार दिल्ली की सरकार के द्वारा किया जा रहा है, तो सभी माननीय सदस्यों से... और उन्होंने 'जय जवान, जय किसान' का नारा भी दिया गया था। हिंदुस्तान लड़ भी सकता है और लड़ के जीत भी सकता है आजादी

के बाद पहली बार ये भरोसा इस देश में लालबहादुर शास्त्री जी के नेतृत्व में ही आया था। तो सभी माननीय सदस्यों से ये निवेदन है कि उस दिन सुबह 7:00 बजे के बाद दिल्ली सरकार उनकी समाधि स्थल, विजय घाट पर एक कार्यक्रम कर रही है। आप सभी वहां पर भी जरूर, पहुंचे धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : इससे पहले कि मैं सदन को अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित करूं। स्वस्थ संसदीय परंपराओं का निर्वाह करते हुए मैं सदन के नेता व माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी, माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया, सभी मंत्रीगण, श्री विजेन्द्र गुप्ता, माननीय नेता प्रतिपक्ष तथा सदन के सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक आभरार व्यक्त करता हूं इसके अलावा विधान सभा सचिव तथा सचिवालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ दिल्ली सरकार के मुख्य सचिव व उनके समस्त अधिकारियों, दिल्ली पुलिस, खुफिया एजेंसी, सीआरपीएफ बटालियन-55 तथा लोक निर्माण विभाग के सिविल इलैक्ट्रिकल व हॉर्ल्टिकल्चर, डिवीजन अग्नि शमन विभाग आदि द्वारा किए गए सराहनीय कार्यों के लिए भी उनका धन्यवाद करता हूं। विधान सभा की कार्रवाई को मीडिया के माध्यम से जन जन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाने वाले सभी पत्रकार साथियों का भी हार्दिक धन्यवाद करता हूं। अब मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि वे राष्ट्रगान के लिए खड़े हों।

(राष्ट्रगान जन-गण-मन)

अध्यक्ष महोदय : अब सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित की जाती है।

(सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित की गई)